अक्टूबर, 2022, वर्ष : 43 अंक : 10

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

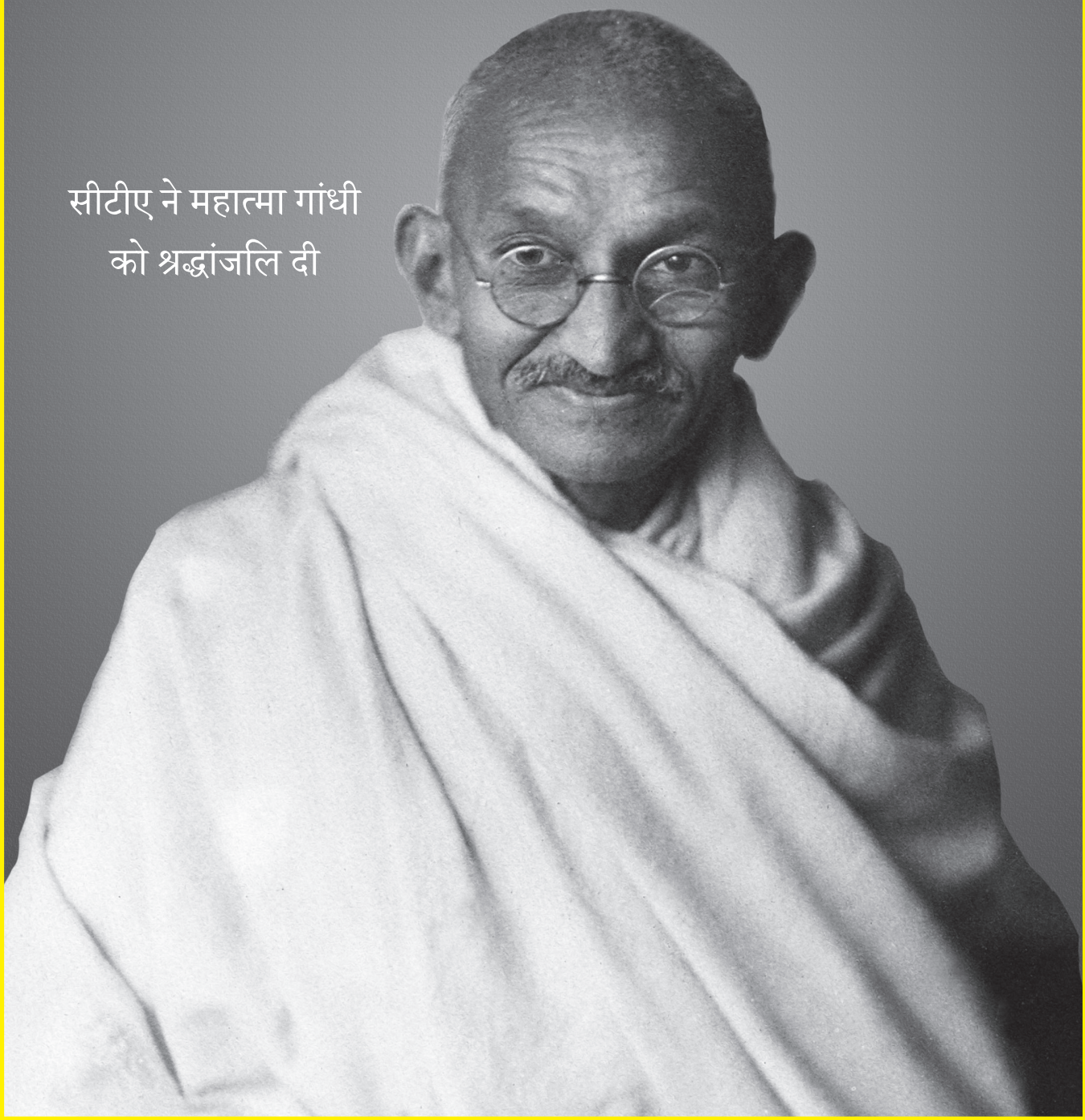

सीटीए ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

अक्टूबर, 2022, वर्ष : 43 अंक : 10

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

सिक्योंग पेंपा छेरिंग।

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन जोरदेन, ताशी देकि

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- मन और जीवन के पारस्परिक संबंध, नैतिकता और सामाजिक नेटवर्क मुद्दे पर बैठक 1
- सीटीए ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी, सिक्योंग ने आज की दुनिया में गांधी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर जोर दिया 2
- तिब्बत मुद्दे को उठाने में स्वीडन और यूरोपीय संघ के सहयोग को और मजबूत करने के लिए सिक्योंग स्टॉकहोम पहुंचे 3
- ल्हासा में तिब्बतियों को चीन की २०वां पार्टी अधिवेशन देखने के लिए मजबूर किया गया ;सूत्रों का कहना है कि कड़े सुरक्षा उपायों के बीच शहर के निवासी अपने घरों तक ही सीमित हैं। 4
- छह तिब्बती लेखकों-कार्यकर्ताओं को चीन ने 'राष्ट्रीय सुरक्षा' को खतरा होने के आरोप में सजा सुनाई चीनी शासन का विरोध करने वाली गतिविधियों के लिए सभी छह को पहले जेल भेजा गया था। 5
- चीन की सख्त कोविड पाबंदियों के खिलाफ तिब्बत की राजधानी में विरोध-प्रदर्शन शुरू तिब्बती निवासी लगभग १५ वर्षों के बाद सबसे बड़े प्रदर्शनों में ल्हासा की सड़कों पर उतरे। 6
- कालोन नोरज़िन डोल्मा ने इटली में तिब्बत प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और तिब्बत समर्थक समूहों से मुलाकात की 7
- कालोन नोरज़िन डोल्मा दक्षिण टायरॉल के राष्ट्रपति से मिली; इटली में यात्रा संपन्न 8
- इंग्लैंड में कंजर्वेटिव पार्टी सम्मेलन में पहली बार तिब्बत वार्ता आयोजित की गई 9
- चीनी संपर्क अधिकारी सुल्लिम ग्यात्सो ने सिटीजन पॉवर इनिशिएटिव फॉर चाइना के साथ बैठक की 10

समाचार -

- सीटीए प्रतिनिधिमंडल का आउटरीच कार्यक्रम यूरोप में चल रहा है 11
- राजदूत डॉ. एलिस्का जिगोवा ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया 12
- सांसद खेंपो कडा न्गेदुप सोनम और लोबसांग ग्यात्सो सिथर ने विधायक श्री के. महादेव से मुलाकात की 13
- आईटीसीओ ने दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म में तिब्बत जागरूकता सह ब्रीफिंग सत्र का आयोजन किया 14
- डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग और सांसद गेशे मोनलम थरचिन ने सिक्किम के वन और पर्यावरण मंत्री कर्मा लोदय भूटिया से शिष्टाचार भेंट की 15
- जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने को लेकर एलटीए की पांच दिवसीय कार्यशाला संपन्न 16
- ऊटी में नीलगिरी तिब्बती शरणार्थी कल्याण संघ ने अमेरिकी कांग्रेस का स्वर्ण पदक मिलने की १५वीं वर्षगांठ मनाई 17
- तिब्बत नेटवर्क एशिया और ऑस्ट्रेलेशिया रिजनल बैठक में सीटीए वी-टैग पहल पर चर्चा 18
- अत्याचार के शिकार अल्पसंख्यकों के अस्तित्व को बचाने में मदद के लिए जापान को चीन के खिलाफ सख्त कदम उठाना चाहिए 19
- चीन में पार्टी कांग्रेस के बाद 'अपराधों पर नकेल'के १०० दिन और तिब्बत 20

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट www.indiatibet.net Email: indiatibet7@gmail.com

अपनी बात

◆ महात्मा गांधी की सत्य-अहिंसा पर आधारित है तिब्बती संघर्ष

प्रत्येक वर्ष की भाँति 02 अक्टूबर, 2022 को भारत सहित विभिन्न देशो में रह रहे तिब्बतियों ने महात्मा गांधी की जयंती उत्साहपूर्वक मनाई। तिब्बतियों ने इस अवसर को हर बार पूरी श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ मनाया है। इसका कारण है गांधीजी की सत्य और अहिंसा के प्रति समर्पण। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका अमूल्य योगदान यही है। वे वैचारिक रूप से नरम दल के थे। वे भारतीय संघर्ष में सक्रिय गरम दल के विचारों से दूर थे। इसके लिये उन्हें अनेक बार कटु आलोचनाओं का षिकार होना पड़ता था। इसके बावजूद उनका मत था कि ''पवित्र साध्य'' की प्राप्ति के लिये ''पवित्र साधन'' का ही प्रयोग करना उचित है। उनके मतानुसार भारत की स्वतंत्रता पूर्णतः पवित्र साध्य है और इसकी प्राप्ति के लिये सत्य-अहिंसा जैसे पवित्र साधनों का ही उपयोग हो। हिंसा के आधार पर प्राप्त स्वतंत्रता पवित्र नहीं हो सकती। वे बराबर भारतीय संस्कृति में निहित ''अहिंसा परमो धर्मः'' पर जोर देते थे।

बौद्ध धर्मगुरु तथा तिब्बत के पूर्व राजप्रमुख परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्षन में जारी तिब्बती संघर्ष गांधी-चिंतन से ही प्रेरित है। महात्मा गांधी के सत्य-अहिंसा संबंधी चिंतन को दलाई लामा ने अपने आचार-विचार-व्यवहार में अपना रखा है। कई बार उन्हें भी अनेक तिब्बती और तिब्बत समर्थक गांधी मार्ग से हटने की सलाह देते हैं। उनके अनुसार विस्तारवादी चीन सरकार सिर्फ शांतिपूर्ण अहिंसक आंदोलन से तिब्बत समस्या का समाधान नहीं करेगी। इस संबंध में वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का उदाहरण देते हैं जिसमें गरम विचारों के स्वतंत्रता सेनानी आवष्यकतानुसार हिंसा का भी प्रयोग करते थे। वे भी गांधीजी की तरह ''अहिंसा परमो धर्मः'' से सहमत थे, लेकिन वे इस श्लोक के अगले वाक्य को भी समान रूप से महत्व देते थे। वह वाक्य है- ''धर्म हिंसा तथैव चा'' पूरे श्लोक का अर्थ है- अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है लेकिन धर्म की रक्षा के लिये हिंसा का प्रयोग उससे भी बढ़कर है।

तात्कालिक परिस्थिति में गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ तथा वर्तमान परिस्थिति में दलाई लामा ने चीन सरकार के खिलाफ शांति एवं अहिंसा को अपनाया ताकि आंदोलनकारियों की क्षति कम से कम हो। इस समय तिब्बती संघर्ष के पक्ष में विष्वजनमत के होने का भी कारण यही है। दलाई लामा की प्रेरणा से गांधीजी का अहिंसा दर्शन तिब्बती संघर्ष का आधार है। सत्य, अहिंसा और शांति का सफल प्रयोग गांधीजी कर चुके थे। इस कारण दलाई लामा का इस पवित्र साधन में पूरा विश्वास है। यही कारण है कि तिब्बती समुदाय गांधी जयंती की पूरे वर्ष भर प्रतीक्षा करता है। गांधी जयंती से तिब्बती आंदोलन को वैचारिक धरातल पर फिर से नई ऊर्जा प्राप्त होती है।

हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिले में धर्मषाला स्थित निर्वासित तिब्बत सरकार, जो कि लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित है, शांतिपूर्ण एवं अहिंसक तिब्बती संघर्ष का ही पक्षधर है। इसके बावजूद साम्राज्यवादी चीन सरकार का क्रूरतापूर्ण दमन तिब्बत में जारी है। अन्य देषों को भी चीन सरकार धमकाती रहती है कि वे तिब्बतियों का समर्थन नहीं करें। शांति के लिये नोबल पुरस्कार से सम्मानित दलाई लामा को वह विघटनकारी तथा आतंककारी बताती है। चीन का यह दृष्टिकोण निंदनीय है क्योंकि चीन सरकार ही उपनिवेषवादी है। उसने स्वतंत्र तिब्बत पर 1959 से अवैध कब्जा कर रखा है। उसके भौगोलिक क्षेत्र को काट-छाँटकर विकृत कर दिया है। चीन सरकार के आतंक और तिब्बत में तिब्बतियों के मानवाधिकारों की समाप्ति का ही परिणाम है कि गत कुछ वर्षों में ही अनेक शांतिप्रिय एवं अहिंसक तिब्बती आंदोलनकारी अपने ही हाथों अपने को आग के हवाले कर चुके। उनका आत्मदाह तिब्बत के लिये सर्वोच्च बलिदान है। इनसे भी चीन सरकार विचलित नहीं होती। आत्मदाह कर चुके आंदोलनकारियों के परिजनों को वह क्रूरतापूर्वक प्रताड़ित कर रही है। इससे स्पष्ट है कि हठधर्मी चीन सरकार के लिये शांति-अहिंसा जैसे मानवीय मूल्य महत्वहीन हैं।

चीन सरकार से तिब्बती पूर्ण स्वतंत्रता भी नहीं मांग रहे। चीन के संविधान और राष्ट्रीयता संबंधी कानून के अनुकूल वे सिर्फ ''वास्तविक स्वायत्तता'' चाहते हैं। वैदेषिक मामले और प्रतिरक्षा चीन सरकार रखे तथा शेष विषयों, जैसे- शिक्षा, कृषि आदि पर कानून बनाने का अधिकार तिब्बतियों को मिले। इस उपाय से चीन की एकता-अखंडता तथा संप्रभुता पूर्णतः सुरक्षित रहेगी और तिब्बतियों को भी स्वशासन सन का अधिकार मिल जायेगा। इसमें चीन और तिब्बत का हित समान रूप से सुरक्षित हो जायेगा। इसी ''वास्तविक स्वायत्तता'' की मांग को ''मध्यममार्ग'' अर्थात् '' बीच का रास्ता'' कहा जाता है। चीन सरकार को चाहिये कि वह तिब्बती प्रतिनिधिमंडल के साथ पुनः वार्ता प्रारम्भ करे। दलाई लामा एवं निर्वासित तिब्बत सरकार के प्रतिनिधिमंडल के साथ चीन सरकार की वार्ता से यह संघर्ष अवष्य दूर होगा।

भारत पर 1962 के चीनी आक्रमण के समय ''पंचशील'' और ''हिन्दी चीनी भाई-भाई'' के संकल्प खोखले सिद्ध हुए। जब तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू चीन के साथ शांति के कबूतर उड़ा रहे थे तब चीन भारत से युद्ध की तैयारी कर रहा था। चीन ने 1962 में बहुत बड़े भारतीय भूभाग को हथिया लिया। बाद में 14 नवंबर, 1962 को भारतीय संसद ने सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर संकल्प लिया कि हम चीन के अवैध नियंत्रण से भारतीय भूभाग को अवस्य मुक्त करायेंगे। भारत की शांति, सुरक्षा, समृद्धि और स्वाभिमान की दृष्टि से इस सर्वसम्मत संसदीय संकल्प को पूरा करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इससे तिब्बत समस्या का हल भी निकल जायेगा।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ मन और जीवन के पारस्परिक संबंध, नैतिकता और सामाजिक नेटवर्क मुद्दे पर बैठक

dalailama.com, १२ अक्टूबर, २०२२

थेगछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। परम पावन दलाई लामा के आवास के सभागार में बुधवार १२ अक्टूबर की सुबह लगभग १८०लोग पहुंचे। परम पावन उनके बीच आए। इनमें से १०१श्रोता माइंड एंड लाइफ संस्थान के सदस्य या मित्र थे। शेष तिब्बती भिक्षु और भिक्षुणियां थीं, जिन्होंने एमोरी विश्वविद्यालय में विज्ञान कार्यक्रमों में भाग लिया था। इनके अलावा तिब्बती वर्क्स एंड आर्काइव्स पुस्तकालय- मेन-त्सी-खांग- के विज्ञान के छात्रों के साथ-साथ दक्षिण भारत में महान मठों में शिक्षा-केंद्रों के लामा और मठाधीश भी शामिल रहे।

माइंड एंड लाइफ संस्थान की अध्यक्ष सुसान बाउर-वू ने परम पावन का स्वागत किया। उन्होंने कहा, हम माइंड एंड लाइफ में आपके मित्र हैं और यहां आकर खुश हैं। हमें आपको नजदीक से देखे हुए तीनसाल हो गए हैं और आपको इतनी अच्छी तरह देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। यह अवसर माइंड एंड लाइफ इंस्टिट्यूट और माइंड एंड लाइफ यूरोप के प्रयासों से फलीभूत हो पाया है। माइंड एंड लाइफ के पहले संवाद को हुए ३५साल हो चुके हैं। हम वापस आकर बहुत खुश हैं।

परम पावन ने उत्तर दिया, 'हमने बहुत सारे माइंड एंड लाइफ संवाद आयोजित किए हैं और मुझे लगता है कि वे बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। दुनिया में बड़े पैमाने पर भौतिक चीजों पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है, लेकिन मन पर बहुत कम ध्यान जाता है। फिर भी जब हम सुख और दुख की बात करते हैं तो वे आंतरिक, मानसिक अनुभव होते हैं। अगर हमारे मन में शांति नहीं है तो हम खुश नहीं रह पाएंगे।'

'दुनिया में हम जो अनेक प्रकार के संघर्ष देखते हैं, वे भौतिक चीजों, भौतिक संसाधनों और शक्ति को लेकर ही हो रहे हैं। इसलिए, हमें यह देखने की जरूरत है कि अतीत में क्या हुआ और इससे सीखना चाहिए ताकि हम शांति, खुशी और एकजुटता के आधार पर भविष्य का निर्माण कर सकें।'

'मन की शांति का मूल करुणा है। जैसे ही हम पैदा होते हैं, वैसे ही माताएं हमारी देखभाल करना शुरू कर देती हैं और हमें करुणा का पहला पाठ पढ़ाती हैं। इसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते। इसी से हमारा जीवन शुरू होता है। एक बच्चे के रूप में हम करुणा के वातावरण में बड़े होते हैं। हम निःसंकोच अपने पड़ोसियों के बच्चों के साथ खेलते हैं। जब मैं छोटा था तब बिना कुछ सोचे- समझे पड़ोस के मुस्लिम और चीनी बच्चों के साथ खेला करता था। हम सब साथ मुस्कुराए और आसानी से एक साथ खेले। ऐसे अच्छे संबंधों का मुख्य कारक सौहार्दता है।'

उन्होंने आगे कहा, 'मुझे ऐसा लगता है कि हम अपनी शिक्षा में अपने बारे में कुछ उपेक्षा करते हैं। अनुभव हमें सिखाता है कि हम जितने अधिक करुणाशील होते हैं, उतनी ही अधिक हम आंतरिक शांति और उसके साथ आंतरिक शक्ति प्राप्त करते हैं। यद्यपि पूरे जीवन में हम बहुत सारे दूसरे लोगों पर निर्भर होते हैं। आधुनिक शिक्षा में ऐसे मानवीय मूल्यों के लिए बहुत कम जगह है।'

शुरुआत में कुछ शब्द कहने के लिए आमंत्रित रिची डेविडसन ने कहा, 'नए मित्रों और पुराने मित्रों के बीच होना कितना अच्छा लगता है। हमारे प्रस्तुतकर्ताओं में एक मानवविज्ञानी, एक मनोवैज्ञानिक, एक मस्तिष्क और संज्ञानात्मक विज्ञान के दार्शनिक और एक मानव व्यवहार, सामाजिक व्यवस्था आदि पर शोध करने वाले संज्ञानात्मक वैज्ञानिक शामिल हैं। उन्होंने कहा, 'हमने हाल ही में दुनिया में कई बदलाव देखे हैं, जिनमें जलवायु

बैठक के दौरान परम पावन दलाई लामा

परिवर्तन और अवसाद में वृद्धि शामिल है। कोरोना महामारी के बाद से यह स्पष्ट हो गया है कि अकेलापन स्वास्थ्य के लिए मोटापे से भी बड़ा खतरा है। हमें अपने अंतर्संबंधों को और अधिक स्वीकार करने की आवश्यकता है। हम चाहते हैं कि ये लोग इस बात पर शोध करें कि एक सामाजिक प्राणी होने का क्या अर्थ है। हम लोकतंत्र के लिए इतना बड़ा खतरा बने ध्रुवीकरण को कैसे दूर कर सकते हैं।' हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता या एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के संबंध में परस्पर संबद्धता के नुकसान के बारे में आकलन करना चाहते हैं। हम इस दुनिया को एक बेहतर, करुणामयी दुनिया बनाना चाहते हैं।'

डेविडसन ने आगे कहा, 'परम पावन, पिछले ३५वर्षों से हम वैज्ञानिकों और विद्वानों से मिलने को लेकर आपके समर्पण के लिए मैं आपको धन्यवाद देने के लिए यहां अपने सभी सहयोगियों की ओर से बोल रहा हूं। हमारी बैठकों का बहुत प्रभाव पड़ा है। आप अपने जीवन में दीर्घायु हों और आप स्वस्थ रहें।'

परम पावन ने उत्तर दिया, 'भले ही अच्छे स्वास्थ्य में योगदान के लिए ही सही, लेकिन मन की शांति बहुत महत्वपूर्ण है। यह आत्मविश्वास और भय से मुक्ति दिलाता है। शायद मस्तिष्क विशेषज्ञ इस पर कुछ प्रकाश डाल सकें। मैं समझता हूं कि अच्छी नींद और सपने मस्तिष्क को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं और मन की शांति इसे सुगम बनाती है।'

परम पावन ने कहा, 'मैंने अपने जीवन में बहुत अशांति का सामना किया है, पर मैंने नालंदा परंपरा में प्रचलित मनोविज्ञान का भी अध्ययन किया है और इसे बहुत उपयोगी पाया है।'

मॉडरेटर रोशी जोआन हैलिफ़ैक्स ने पहले वक्ता और हार्वर्ड में मानवविज्ञानी जोसेफ हेनरिक का परिचय दिया, जो कई विषयों में अपनी विशेषज्ञता रखते हैं। उन्होंने अपने शोध से इस बात को उद्घाटित किया है कि आनुवंशिकी और संस्कृति हमारे दिमाग को कैसे आकार देते हैं।

हेनरिक ने अपना वक्तव्य शुरू करते हुए कहा, 'मेरा शोध इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि वह क्या चीज है जो हमें मानव बनाती है। हम मनुष्य १,००,०००वर्षों में दुनिया भर में फैले हैं। हमारी प्रजाति इतनी प्रभावशाली क्यों है? अक्सर अनुसंधान संकेत देते हैं कि भाषा, उपकरणों के उपयोग और सामाजिक सहयोग जैसे कारकों ने मनुष्य को वह बना दिया है जो वह है। हमारी संस्कृति संचयी है। हम सीखते हैं, संशोधित करते हैं, सुधरते हैं और अपने को परिष्कृत करते हैं जो अंततः सफल हो जाता है।'

उन्होंने आगे कहा, 'संस्कृति ने हमारे अनुवांशिक स्वभाव और हमारी प्रकृति को आकार दिया है। हमारे सोचने के तरीके ने हमारे शरीर और दिमाग को आकार दिया है। उदाहरण के लिए हम मनुष्यों ने आग का आविष्कार किया और खाना बनाना सीखा, जिसने हमारे शरीर क्रिया और शरीर के विज्ञान को बदल दिया। हम दूसरों से बहुत सी बातें सीखते हैं। इस तरह परिवर्तन सामाजिक मानदंडों और भाषा के पहलुओं से जुड़ी हुई होती हैं।'

परम पावन ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'मैं विश्वास करता हूं कि सभी मनुष्यों के बीच एकता का विचार सबसे महत्वपूर्ण है। सोचने के पुराने तरीकों का अनुसरण करते हुए हम बहुत अधिक हिंसा और युद्ध में लगे हुए हैं, जबकि अब हमें एक साथ रहना सीखना होगा।'

श्री हेनरिक ने आगे कहा, 'सवाल यह है कि हम कैसे एकता की भावना का निर्माण कर सकते हैं। हम पाते हैं कि हम नियम बनाते हैं, हम एक-दूसरे पर आश्रित मनोविज्ञान विकसित करते हैं जिसे भोजन साझा करने के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। दूसरों का जीवित रहना हमारे अपने अस्तित्व को प्रभावित करता है। जब हम अन्य समाजों का अध्ययन करते हैं तो हम भोजन करने की सामान्य प्रथाओं को देखते हैं।'

उन्होंने कहा, 'नस्लीय मनोविज्ञान बताता है कि मनुष्य का सांस्कृतिक विकास हुआ है। हम अपने जैसे अन्य लोगों के साथ संकाय साझा करते हैं। हमें यह जांचने की आवश्यकता है कि वैश्विक मनोविज्ञान का निर्माण कैसे किया जाए। कृषि ने संघर्ष को जन्म दिया। हम सीख सकते हैं कि सांस्कृतिक परिवर्तन का उपयोग कैसे किया जा सकता है और कैसे वैश्विक पहचान का निर्माण किया जा सकता है जो स्थानीय समूहों को भी समायोजित करने वाला हो। मानव प्रकृति की अंतर्दृष्टि हमें हमारे सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में मदद कर सकती है।'

रोशी जोन हैलिफ़ैक्स ने हेनरिक को अगली प्रस्तुतकर्ता मौली क्रॉकेट के साथ सीटों की अदला-बदली करने के लिए कहा। रोशी ने क्रॉकेट को अलग तरह की वैज्ञानिक के रूप में परिचय कराया। रोशी ने बताया कि क्रॉकेट ने मानव प्रकृति को समझने में योगदान देने के लिए कई अलग-अलग कारकों को एक साथ समन्वित किया है।

परम पावन ने टिप्पणी की, 'अब हमें अतीत की नकल किए बिना भविष्य के बारे में सोचना होगा। हमें न केवल अपने देश, अपने समुदाय आदि के संबंध में सोचना है बल्कि एक व्यापक दृष्टिकोण अपना कर हमें सभी मनुष्यों की एकता और पूरी मानवता के बारे में सोचना है।'

मौली क्रॉकेट ने अपने वक्तव्य की शुरुआत करते हुए कहा, 'अब तक आपने जो कुछ भी कहा है, मैं उससे सहमत हूं। आधुनिक विज्ञान काफी हद तक आपसे सहमत है कि हम अनिवार्य रूप से एक ही हैं। हालांकि, बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो मानते हैं कि मनुष्य मूल रूप से स्वार्थी हैं और एक-दूसरे से अलग है।

'मनुष्य के स्वार्थी होने के विचार ने नीति को प्रभावित किया है, जैसा कि हमने महामारी के दौरान देखा। लेकिन ये अवलोकन निश्चित या पूर्ण नहीं हैं, क्योंकि हम यह भी जानते हैं कि दूसरों की मदद करने से हमें खुशी मिलती है। जब हम ऐसा करते हैं तो मस्तिष्क के इसी तरह के हिस्से उत्तेजित होते हैं जैसे कि जब हम अच्छे भोजन का आनंद लेते हैं या सूर्यास्त देख कर आनंदित होते हैं। एक साथ काम करने में स्वार्थ बाधक है।

'हमें इस बात पर ध्यान देने की ज़रूरत है कि हम कितने जुड़े हुए हैं। हमें सकारात्मक तरह की घटनाओं को बताने की जरूरत है।'

परम पावन ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि, 'हम सभी एक सुखी जीवन जीना चाहते हैं और हम सभी को ऐसा करने का अधिकार है। यह सामान्य ज्ञान है और हमें ऐसा करने के लिए हथियारों की ज़रूरत नहीं है।

क्रॉकेट आगे बोलती रहीं, 'रूस और यूक्रेन के बीच समस्या का एक हिस्सा उन दोनों के बीच घृणित कहानियों का प्रसार है। चीजें इस तरह नहीं होनी चाहिए। जहां तक संभव हो सके, अधिक से अधिक सकारात्मक कहानियां बताने का प्रयास करना चाहिए। यह देखा गया है कि जब लोग एक साथ आते हैं, तब लोगों के स्वमं के देखने के नजरिए में परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए कालचक्र अभिषेक या अन्य प्रकार के उत्सव में भाग लेने के लिए आए लोगों को देखा जा सकता है।'

परम पावन ने बीच में कहा कि उनका जीवन वास्तविक विश्व शांति प्राप्त करने के लिए समर्पित है।

इस पर क्रॉकेट ने टिप्पणी की, पहले आप धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के बारे में बात कर रहे थे। हमारे शोध से पता चलता है कि जब लोग एक साथ आते हैं और सकारात्मक संदर्भ में एक-दूसरे के साथ समय बिताते हैं, तो वे अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं।

नेतृत्व के बारे में एक प्रश्न के उत्तर में परम पावन ने सुझाव दिया कि लोकतांत्रिक देशों में नेता आम जनता के बीच से निकलते हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमें ऐसे नेताओं की आवश्यकता है जो सौहार्दता को बढ़ावा दें।

ऐसे नेता भी हैं जो शक्ति का प्रयोग करने में अधिक रुचि रखते हैं, इस पर परम पावन हंसे और इंगित किया कि जब ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन को कम करने की बात आई तो उनकी शक्ति प्रभावहीन साबित हो गई।

मौली क्रॉकेट ने कहा कि नेता हम सभी को एक साथ मिलाकर बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं। उन्होंने पूछा कि जब एकता और जुड़ाव की भावना स्पष्ट रूप से एक अलग तरह के परिदृश्य का निर्माण करती है तो ऐसा कैसे होता है कि बहुत से लोग स्वार्थ को ही वास्तविक परिदृश्य मानते हैं।

परम पावन ने इसका उत्तर दिया, 'यह हमारी शिक्षा में कमियों और भौतिकवादी दृष्टि से सोचने की हमारी प्रवृत्ति का परिणाम है। हमें छात्रों को सौहार्दता को सकारात्मक और लाभकारी रूप में देखने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। यही प्रसन्नता और आंतरिक शक्ति की वास्तविक कुंजी है।

जोन हेनरिक ने मानवता की एकता को स्वीकार किया, लेकिन कहा कि हमें स्थानीय संपर्कों की भी आवश्यकता है। उन्होंने पूछा कि स्थानीय और वैश्विक समुदायों के बीच तनाव को कैसे सुलझाया जा सकता है।

परम पावन ने उत्तर दिया, 'हम विभिन्न राष्ट्रों से संबंधित हैं, विभिन्न भाषाएं बोलते हैं और हमारे सोचने के तरीके अलग-अलग हैं, पर हम हमेशा इस बात पर ध्यान रख सकते हैं कि इन सबके साथ ही जो हमें एक करता है वह यही तथ्य है कि हम मनुष्य हैं। सदियों पूर्व तिब्बतियों ने बौद्ध साहित्य का पाली और संस्कृत से तिब्बती भाषा में अनुवाद किया। भाषा बदल गई, लेकिन सामग्री वही रही।

मौली क्रॉकेट ने रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध में हो रहे अन्याय की प्रतिक्रिया में लोगों के गुस्से के बारे में पूछा। उन्होंने स्वीकार किया कि गुस्सा परेशान करने वाला हो सकता है, लेकिन सुझाव दिया कि कभी-कभी गुस्सा बदलाव ला सकता है। परम पावन ने सहमति व्यक्त की कि कभी ऐसा समय भी आता है जब स्पष्ट रूप से कठोर शब्द या कठोर कार्य का क्रियान्वयन न्यायोचित होता है, क्योंकि वे अंततः अच्छी भावना से प्रेरित होते हैं। उन्होंने उदाहरण के रूप में अपने बचपन का एक वाकये का हवाला दिया, जब उनके ट्विटर के चेहरे पर उनके प्रति गुस्सा और निषेधात्मक का भाव आ गया था।

हेनरिक ने टिप्पणी की कि विश्व पिछले ५०वर्षों में और अधिक अन्योन्याश्रित हो गया है, जिस पर परम पावन सहमत हुए। उन्होंने टिप्पणी की कि अधिक लोकतांत्रिक दृष्टिकोण की ओर रुझान बढ़ रहा है। जनता व्यापक सम्मान चाहती है और इसके विचार अधिक वजन रखते हैं। हालांकि, जनता को भी पूरी मानवता का हिसाब रखने के लिए खुद को याद दिलाते रहने की जरूरत है।

उन्होंने कहा, 'संवादके माध्यम से समस्याओं को हल करने के लिए गैर-सैन्य समाधान तलाशने की तत्काल आवश्यकता है। यह आज की नई स्थिति है। हमें 'हम' और 'उन' में बिना किसी विभाजन के एक साथ रहना है।

मॉडरेटर ने सत्र को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए जॉन डन को आमंत्रित किया। उन्होंने एक प्रश्न रखा कि हम क्या सिखा सकते हैं जो एक बेहतर वैश्विक संस्कृति को बढ़ावा देनेवाला हो। उन्होंने इसका उत्तर शांतिदेव के 'बोधिसत्व के मार्ग में प्रवेश' के एक श्लोक से दिया :

संसार में जितने भी लोग दुःख उठाते हैं वे अपने सुख की इच्छा के कारण ऐसा करते हैं। संसार में जितने भी सुखी हैं, वे दूसरों के सुख की कामना के कारण ही सुखी हैं। ८/१२९ परम पावन ने सहमति व्यक्त की और उसी ग्रंथसे निम्न श्लोकजोड़ा: अधिक क्या कहना? अपने लाभ के लिए तरसने वाले मूर्ख और दूसरों के लाभ के लिए कार्य करने वाले संत के बीच के अंतर को ध्यान से देखना चाहिए। ८/१३०उन्होंने चंद्रकीर्ति के 'मध्यम मार्ग में प्रवेश' ग्रंथके अन्य शक्तिशाली छंदों का उल्लेख किया जो स्पष्ट रूप से बताते हैं कि करुणा की साधना और शून्यता को समझने वाली प्रज्ञा एक महान पक्षी के पंखों की तरह कार्य करती है जो चित्त की प्रबुद्ध स्थिति की ओर उड़ता है।

सत्र के समापन उद्बोधन के लिए आमंत्रित रिची डेविडसन ने परम पावन को सुबह का समय देने के लिए धन्यवाद दिया।

उन्होंने आगे कहा, 'मैंने सुना है कि आप तिब्बतियों के एक बड़े समूह को अपना उपदेश देते हैं। लेकिन इस तरह के कर्मकांड और प्रार्थना पर्याप्त नहीं हैं। हमें अपने दिमाग को प्रशिक्षित करना होगा। हर इंसान के पास खुशी हासिल करने की क्षमता और अधिकार है। औसत व्यक्ति को अपने दिमाग को प्रशिक्षित करने में मदद करने के लिए हम क्या कर सकते हैं? अतीत में कुछ लोग अपनी दांतों को साफ करते थे, अब लगभग सभी करते हैं। क्या कोई ऐसा ही सरल, सीधा अभ्यास है जिसे हम सब अपना सकते हैं?'

परम पावन का उत्तर संक्षिप्त और सारगर्भित था।

उन्होंने कहा, 'हमें लोगों को बताना होगा कि सौहार्दता चित्त की शांति, आंतरिक शांति, आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास का स्रोत है। मैं इसे दूसरों के साथ साझा करने के आपके प्रयासों पर भरोसा करता हूं।'

◆ सीटीए ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी, सिक्योंग ने आज की दुनिया में गांधी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर जोर दिया

tibet.net, ०२ अक्टूबर, २०२२

धर्मशाला। सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के नेतृत्व वाले केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) ने महात्मा गांधी को उनकी १५३वीं जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की। गंगचेन किइशोंग में आयोजित आधिकारिक समारोह में निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल, उपाध्यक्ष डोल्मा छेरिंग तेखांग, कार्यवाहक मुख्य न्यायिक आयुक्त कर्मा दादुल, कालोन, सचिव, सीटीए के स्वायत्त निकायों के प्रमुख और सीटीए के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

मीडिया के साथ बातचीत में सिक्योंग ने कहा, 'दुनिया ने बहुत सारे असाधारण नेता हुए हैं। लेकिन गांधी पहले प्रभावशाली और प्रेरक नेता हैं, जिन्होंने अहिंसा और अहिंसक दृष्टिकोण के माध्यम से संघर्ष को हल करने के लिए पूर्ण निष्ठा का मानदंड स्थापित किया। १९०९ में उनके सिद्धांतों और दृष्टि का प्रतीक 'हिंद स्वराज' में लिखा गया उनका विचार भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मौलिक आचार संहिता बनी।

भारत की स्वतंत्रता हासिल करने में गांधी ने जिन सिद्धांतों और विचारधाराओं को अपनाया था, सिक्योगे ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि परम पावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन निरंतर उसी मॉडल पर चल रहा है।

सिक्योंग ने आज की दुनिया में गांधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए कहा, 'हमारा आंदोलन न केवल गांधी के अहिंसा के सिद्धांतों और धर्म से प्रेरित है और उन पर आधारित है, बल्कि सभी धर्मों की एकता का समर्थन करने का हमारी नीति भी गांधी के विचारों के अनुरूप हैं।' उन्होंने इस अवसर पर चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने में अहिंसा के पालन को भी एकमात्र साधन के रूप में अपनाने का संकल्प लिया।

◆ तिब्बत मुद्दे को उठाने में स्वीडन और यूरोपीय संघ के सहयोग को और मजबूत करने के लिए सिक्योंग स्टॉकहोम पहुंचे

tibet.net, १८ अक्टूबर, २०२२

स्टॉकहोम। सिक्योंग पेन्पा छेरिंग यूरोप के तीन देशों के अपने दौरे के अंतिम चरण में रविवार १६ अक्टूबर को स्टॉकहोम पहुंचे। उन्होंने यहां यात्रा के पहले दिन कई कार्यक्रमों में भाग लिया। उनके इस संक्षिप्त यात्रा कार्यक्रम में स्वीडिश सांसदों, सरकारी अधिकारियों, थिंक टैंकों, मीडिया, अंतरराष्ट्रीय विकास संगठनों, तिब्बतियों और तिब्बत समर्थकों के साथ बातचीत शामिल था।

रविवार कोसिक्योंग ने स्वीडिश संसद में मॉडरेट पार्टी की सांसद सुश्री मार्गरिटा सीडरफेल्ट से मुलाकात की और तिब्बत में चीनी सरकार की नई और दमनकारी नीतियों के आलोक में तिब्बत पर नई पहल करने पर गहन चर्चा की।

सिक्योंग ने बैठक के बारे में ट्विटर पर लिखा,'स्वीडिश संसद में आज एमपी @MCederfelt के साथ बैठक में मैंने तिब्बत के अंदर गंभीर स्थिति, विशेष रूप से चल रहे दमनकारी औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों और डीएनए के सामूहिक संग्रह के खिलाफ यूरोपीय संघ की मजबूत प्रतिक्रिया का नेतृत्व करने में स्वीडन की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। हमने मूल्यों और आपसी सम्मान से प्रेरित यूरोपीय संघ की विदेश नीति को आगे बढ़ाने में स्वीडन की भूमिका पर भी चर्चा की।

मार्गरिटा ने प्रधानमंत्री के मतदान से ठीक पहले मिलने का समय देने में संकोच नहीं किया और सिक्योंग के साथ तिब्बत में स्थिति को उठाने के लिए स्वीडेन और यूरोपीय संघ के सहयोग को मजबूत करने की संभावनाओं पर चर्चा की।

बैठक के अंत में उन्होंने इसके लिए तिब्बती संसदीय मैत्री समूह का सम्मेलन फिर से बुलाने का आश्वासन दिया।
स्वीडन में चुनाव के बाद किसी मैत्री समूह द्वारा आयोजित यह पहली बैठक थी।
संसद में आयोजित बैठक में लंदन स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि सोनम फ्रैसी, स्वीडिश-तिब्बत समिति के अध्यक्ष मटियास ब्योर्नरस्टेड और स्वीडन में तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष रिनचेन छोमो शामिल हुए।
बाद में, सिक्योंग और स्वीडिश तिब्बत समिति के प्रतिनिधियों (उपाध्यक्ष न्यिमा शेर्लोखांगसर सहित) ने स्टॉकहोम स्थित अपने कार्यालय में स्वीडन ऑर्गनाइजेशन फॉर इंडिविजुअल रिलीव (एसओआईआर-आईएम) के बिजनेस प्रमुख ओलेना रोगोजिना के साथ एक घंटे की बैठक की।
दिन भर की व्यस्तताओं के बीच सिक्योंग ने रेडियो शो की मेजबान नन्ना हॉलबर्ग,स्वीडन में शीर्ष रेडियो चैनल 'कल्टर्निट रेडियो शो' के स्तंभकार और स्वीडन के दो राष्ट्रव्यापी सांध्य समाचार- पत्रों में से एक 'एक्सप्रेसन' के एक स्तंभकार को अलग- अलग साक्षात्कार दिए।
सिक्योंग के शाम के कार्यक्रमों में क्रमशः स्वीडिश तिब्बत समिति, तिब्बत के दोस्तों और स्वीडन में रेडिसन स्टॉकहोम सोलना द्वारा पार्क इन में तिब्बती समुदाय के साथ बैठक शामिल रहीं।
सोमवार को यहां की अपनी आधिकारिक यात्रा के अंतिम दिन सिक्योंग ने स्वीडिश संसद और स्टॉकहोम में एक प्रमुख थिंक टैंक के साथ वार्ता की।
ल्हासा में तिब्बतियों को चीन की २०वां पार्टी अधिवेशन देखने के लिए मजबूर किया गया

◆ सूत्रों का कहना है कि कड़े सुरक्षा उपायों के बीच शहर के निवासी अपने घरों तक ही सीमित हैं।

rfa.org / सांगयाल कुंचोक, १७ अक्टूबर, २०२२

आरएफएकी खबर के अनुसार,चीनी अधिकारी तिब्बत की क्षेत्रीय राजधानी ल्हासा के निवासियों को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के २०वें अधिवेशन को टेलीविज़न पर देखने का आदेश दे रहे हैं। तिब्बती लोगों को पार्टी अधिवेशन के समाप्त होने तक अपने घर छोड़ने से मना किया गया है।
तिब्बती सूत्रों का कहना है कि पश्चिमी चीनी प्रांतों के तिब्बती क्षेत्रों में मठों और स्कूलों को भी सप्ताह भर चलने वाली कार्यवाही देखने का निर्देश दिया गया है, जो रविवार से बीजिंग में शुरू हुआ है।
तिब्बत में रहने वाले एक सूत्र ने आरएफए को बताया कि ल्हासा के निवासी तिब्बती अब अपने घरों तक ही सीमित हैं, ताकि वे चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और अन्य शीर्ष नेताओं द्वारा दिए गए भाषणों पर बारीकी से ध्यान देकर सुन सकें।
आरएफए के सूत्र ने सुरक्षा के लिए नाम न छापने की शर्त पर कहा कि, 'अधिवेशन के कारण कुछ दिन पहलेप्रत्येक परिवार के एक व्यक्ति को किराने का सामान और अन्य आवश्यक सामान लेने के लिए बाहर जाने की अनुमति दी गई थी, लेकिन अब किसी को भी अपने घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं है।'
एक अन्य तिब्बती स्रोत ने आरएफएको लिखते हुए कहा कि सिचुआन और किंघई प्रांतों के न्गाबा (चीनी- अबा), कार्देज़ (गांजी), और गोलोग (गुओलुओ) तिब्बती स्वायत्त प्रीफेक्चर में बौद्ध भिक्षुओं को भी अधिवेशन देखने के आदेश दिए गए हैं।
सूत्र ने कहा, 'न्गाबा, ख्युंगचू (होंगयुआन)और ज़मथांग (रांगटंग) क्षेत्र के सभी स्कूलों को भी शुरू से ही पार्टी अधिवेशन की बैठकों को देखने का निर्देश दिया गया है।'
आरएफएसे बात करते हुए भारत स्थित निर्वासित तिब्बती सरकार के केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के प्रवक्ता तेनज़िन लेक्षेय ने कहा कि बीजिंग को डर है कि पार्टी अधिवेशन की बैठकों के दौरान तिब्बती विरोध शुरू कर सकते हैं।'
लेक्षेय ने कहा,'यही कारण है कि उन्हें घर के अंदर रहने के लिए मजबूर किया जा रहा है। चीनी सरकार 'तिब्बत' को एक बहुत ही संवेदनशील मुद्दा मानती है, लेकिन ये रणनीति तब तक सफल नहीं होगी जब तक कि तिब्बत की स्थिति का समाधान नहीं हो जाता।'
पूर्व में एक स्वतंत्र राष्ट्रतिब्बत पर ७०साल से अधिक समय पहले चीनी सरकार द्वारा आक्रमण किया गया था और बलपूर्वक इसे चीन में शामिल किया गया था। इसके बाद तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा और उनके हजारों अनुयायी भारत और दुनिया भर के अन्य देशों में निर्वासन में भाग गए थे।
बीजिंग ने दलाई लामा पर तिब्बत में अलगाववाद भड़काने का आरोप लगाया है।
चीन के ६९ वर्षीय राष्ट्रपति शी जिनपिंग को इस सप्ताह पार्टी कांग्रेस के प्रतिनिधियों द्वारा तीसरे कार्यकाल के लिए निर्वाचित करने में व्यापक रूप से समर्थन किए जाने की उम्मीद है।शी जिनपिंग हाल के पार्टी मानदंडों को तोड़ते हुए माओत्से तुंग के बाद से चीन के सबसे शक्तिशाली शासक बन गए हैं।
छह तिब्बती लेखकों-कार्यकर्ताओं को चीन ने 'राष्ट्रीय सुरक्षा' को खतरा होने के आरोप में सजा सुनाई

◆ चीनी शासन का विरोध करने वाली गतिविधियों के लिए सभी छह को पहले जेल भेजा गया था।

rfa.org / सांगयाल कुंचोक, १८ अक्टूबर, २०२२

तिब्बती सूत्रों का कहना है कि तिब्बत में चीनी अधिकारियों ने 'अलगाववाद को उकसाने'और 'राष्ट्रीय की सुरक्षा को खतरे में डालने'के आरोप में छह तिब्बती लेखकों और कार्यकर्ताओं को चार से १४ साल तक की कैद की सजा सुनाई है।
निर्वासन में रह रहे एक सूत्र ने बताया कि छह लोगों को सितंबर में सिचुआन प्रांत के कार्देज़ (चीनी-गांजी में) तिब्बती स्वायत्त प्रीफेक्चर में उनकी गिरफ्तारी के बाद एक से दो साल तक तनहाई कैद में रखने के बाद सजा सुनाई गई है।
आरएफएके सूत्र ने बताया कि यह सब पूरी तरह से गोपनीयता में किया गया था।स्विट्जरलैंड में रहने वाले एक पूर्व राजनीतिक कैदी गोलोग जिग्मे ने क्षेत्र में संपर्कों का हवाला देते हुए कहा, 'तिब्बत के अंदर कड़े प्रतिबंधों और निरंतर जांच के कारण उनकी वर्तमान स्वास्थ्य स्थितियों या उन्हें कहां रखा जा रहा है, इसके बारे में अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त करना अब बहुत मुश्किल है।'

कार्देज़ पीपुल्स कोर्ट द्वारा सज़ा दिए जाने के कारण लेखक और पूर्व स्कूली शिक्षक गंगकी द्रुपा क्याब १४ साल की जेल की सजा काट रहे हैं। इसी तरहलेखक और पर्यावरण कार्यकर्ता सेयनम को छह साल और राजनीतिक कार्यकर्ता गंगबू युद्रम को सात साल की सजा काट रहे हैं।
कार्देज़ की अदालत द्वारा राजनीतिक कार्यकर्ता त्सेरिंग डोलमा को आठ साल,लेखक पेमा रिनचेन को चार साल और राजनीतिक कार्यकर्ता समदुप को आठ साल की सजा सुनाई गई है।
अपनी गतिविधियों के लिए पिछली जेल की सजा काट रहे इस समूह की गिरफ्तारी और सजा तिब्बती क्षेत्रों में आधिकारिक चीनी नीतियों और विचार के खिलाफ जीवन जीने वाले और विचार रखनेवाले पुरुषों और महिलाओं को सबक सिखाने के लिए बीजिंग द्वारा जारी अभियान को ही रेखांकित करता है।
पूर्व में स्वतंत्र राष्ट्रतिब्बत पर चीनी सरकार द्वारा आक्रमण किया गया था और ७०साल से अधिक समय पहले बलपूर्वक चीन में शामिल कर लिया गया थाऔर तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा और उनके हजारों अनुयायी बाद में भारत और दुनिया भर के अन्य देशों में चीन के शासन के खिलाफ १९५९ के असफल राष्ट्रीय विद्रोह के बाद निर्वासन में भाग गए थे।
चीनी अधिकारियों ने तिब्बतियों की राजनीतिक गतिविधियों और सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान को बचाने के लिए शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन की अभिव्यक्ति पर रोक लगा दिया है। इसके साथ ही तिब्बतियों को उत्पीड़न, यातना, कारावास और न्यायेतर हत्याओं के दौर से गुजरना पड़ रहा है। चीन ने इन हथकंडों को अपनाकर इस क्षेत्र पर एक मजबूत पकड़ बनाए रखी है।

◆ चीन की सख्त कोविड पाबंदियों के खिलाफ तिब्बत की राजधानी में विरोध-प्रदर्शन शुरू तिब्बती निवासी लगभग १५ वर्षों के बाद सबसे बड़े प्रदर्शनों में ल्हासा की सड़कों पर उतरे।

rfa.org, २६ अक्टूबर, २०२२

रेडियो फ्री एशिया (आरएफए) की रिपोर्ट के अनुसार, तिब्बती क्षेत्रीय राजधानी ल्हासा में गुस्साए निवासियों ने कठोर कोविड-१९ लॉकडाउन के विरोध में बुधवार को सड़कों पर उतर आए। यह प्रतिबंध चीनी अधिकारियों ने उन पर दो महीने से अधिक समय पहले लगाया है। हालिया विरोध-प्रदर्शन २००८ के तिब्बती विद्रोह के बाद से शहर में पहला बड़ा विरोध-प्रदर्शन है। चीनी सरकार द्वारा जातीय अल्पसंख्यक समूह पर दमन चक्र चलाने के खिलाफ उस समय प्रदर्शनों की लंबी शृंखला चली थी। चीनी पुलिस और सैन्य बलों ने उस विद्रोह को कुचल दिया था, जिसमें दर्जनों लोग मारे गए।
आरएफए द्वारा प्राप्त वीडियो में सैकड़ों प्रदर्शनकारियों को सड़कों पर दिखाया गया है। दिन के समय के एक वीडियो में लोगों को ज्यादातर खड़े या एक- दूसरे से मिलते हुए दिखाया गया है, जबकि अधिकारी सफेद सुरक्षात्मक सूट में पास में खड़े हैं। रात के समय के दो वीडियो में भीड़ और कारें एक बड़ी सड़क को अवरुद्ध कर रही हैं और भीड़ नारे लगाते हुए आगे बढ़ जाती है।
वीडियो में प्रदर्शनकारियों को तिब्बती और मंदारिन चीनी दोनों भाषाओं में नारे लगाते हुए सुना जा सकता है।लेकिन वे क्या कह रहे थे, इसे समझना मुश्किल है।
सूत्रों ने आरएफए की तिब्बती सेवा को सूचित किया कि प्रदर्शनकारियों ने चीनी अधिकारियों को चेतावनी दी कि अगर उन्होंने बीजिंग की शून्य-कोविड नीति के तहत लागू किए गए कोविड लॉकडाउन प्रतिबंधों को हटाने से इनकार कर दिया तो वे 'आग लगा देंगे'।
प्रदर्शनकारियों की बातों से स्पष्ट नहीं हो रहा है कि वास्तव में उनके कहने का क्या मतलब था, लेकिन हो सकता है कि उन्होंने आत्मदाह का संकेत दिया हो।ज्ञात हो कि २००९ के बाद से १५०से अधिक आत्मदाह की घटनाएं हो चुकी हैं।
आएफए द्वारा जारी मानचित्रों में सड़क के संकेतों और रेस्तरां के नामों के आधार पर अंदाजा लगाया जा सकता है कि प्रदर्शनकारी ल्हासा के शहर के पूर्वी हिस्से में चेंगगुआन जिले के 'चकरोंग'क्षेत्रके साथ ही शहर के पाई क्षेत्र में सड़क पर दिखाई दे रहे हैं।
एक सूत्र ने आरएफए को यह भी बताया कि ल्हासा में तिब्बतियों को डर है कि नागरिकों और चीनी पुलिस के बीच हाथापाई हिंसक हो सकती है। ल्हासा में लॉकडाउन अगस्त की शुरुआत में शुरू हुआ क्योंकि वहां और पूरे चीन में कोविड की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी।
ल्हासा के निवासियों ने सोशल मीडिया पर कहा है कि तैयारी के लिए पर्याप्त समय के बिना लॉकडाउन का आदेश आया, जिससे कुछ निवासियों को भोजन की कमी हो गईऔर वायरस से संक्रमित लोगों के लिए पर्याप्त उपचार की व्यवस्था करना मुश्किल हो गया।
आरएफए ने पिछले महीने के अंत में बताया कि तिब्बत के अंदर एक स्रोत ने सोशल मीडिया पर रिपोर्ट की पुष्टि की कि ल्हासा में तिब्बती इमारतों से कूद रहे थे।
पूर्व में स्वतंत्र राष्ट्र तिब्बत पर ७० साल से अधिक समय पहले चीनी सरकार द्वारा आक्रमण किया गया था और बलपूर्वक इसे चीन में शामिल किया गया था। इसके बाद चीन के शासन के खिलाफ १९५९ के असफल राष्ट्रीय विद्रोह के बाद तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा और उनके हजारों अनुयायी भारत और दुनिया भर के अन्य देशों में निर्वासन में भाग गए थे।
चीनी अधिकारियों ने तिब्बतियों की राजनीतिक गतिविधियों और सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान के संरक्षण के लिए शांतिपूर्ण विरोध- प्रदर्शन और विचार-अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित कर दिया है। चीन शासन द्वारा तिब्बतियों को उत्पीड़न, यातना, कारावास दिया जाता है और उनकी बिना कोई मुकदमा चलाए न्यायेतर रूप से हत्या कर दी जाती है। ऐसा करके चीन ने इस क्षेत्र पर मजबूत पकड़ बना रखी है।
कठोर चीनी शून्य-कोविड लॉकडाउन और अन्य प्रतिबंधों को झेलने वाले तिब्बती अकेले नहीं हैं।
आरएफए ने पिछले महीने बताया कि उत्तरी झिंझियांग के शहर गुल्जा में चीन की कोविड लॉकडाउन नीतियों के कारण कम से कम २२ लोगों की भुखमरी या चिकित्सा की कमी से मौत हो गई।
चीनी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उग्यूरो द्वारा पोस्ट किए गए और सरकारी सेंसर द्वारा जल्दी से हटाए गए वीडियो में

स्थानीय लोगों को सख्त शून्य-कोविड लॉकडाउन के तहत भोजन और चिकित्सा देखभाल तक पहुंचने के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। कुछ लोगों का कहना है कि परिवार के सदस्यों की भूख से मौत हो गई थी।

◆ कालोन नोरज़िन डोल्मा ने इटली में तिब्बत प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और तिब्बत समर्थक समूहों से मुलाकात की

tibet.net, ०१ अक्टूबर, २०२२

इटली। सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) कालोन नोरज़िन डोल्मा और पेरुगिया के संस्कृति मंत्री माननीय लियोनार्डो वारासानो ने इटली के पेरुगिया में शुक्रवार, ३०सितंबर २०२२को प्रतिनिधि थिनले चुक्की के साथ 'तिब्बत: एशिया का दिल (तिब्बत: हार्ट ऑफ एशिया)' शीर्षक तीन सप्ताह की फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

'तिब्बत की कहानी- चीन के कब्जे, निर्वासन में जीवन और निरंतर दमन' को दर्शाती प्रदर्शनी पेरुगिया की नगर पालिका और इटालिया-तिब्बत एसोसिएशन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई है।

'तिब्बत: एशिया का दिल' प्रदर्शनी में बावन विशाल बोलती, प्रतीकात्मक और आकर्षक चित्र शामिल हैं, जिन्हें इटली-तिब्बत एसोसिएशन के अध्यक्ष, आरएआई के लिए वृत्तचित्र निर्माता और फोटोग्राफर क्लाउडियो कार्डेली द्वारा बनाया गया है। इटली में तिब्बत की कहानियों को बताने के लिए क्लाउडियो कार्डेली ने तिब्बत के साथ अपने चालीस से अधिक वर्षों के संबंध में और वहां की बार-बार की यात्राओं के दौरान मध्य एशिया में तिब्बती संस्कृति के सभी क्षेत्रों से छवियों को एकत्र किया है।
२९सितंबर को रोम में उतरने के तुरंत बाद कालोन नोरज़िन डोल्मा ने तिब्बत और तिब्बत समर्थक समूहों के लिए इटली संसदीय समूह के पूर्व सदस्यों से मुलाकात की। कालोन नोरज़िन डोल्मा ने तिब्बत के न्यायोचित मुद्दे के लिए समर्थन देने के एवज में तिब्बत के लिए इटली संसदीय समूह के सभी पूर्व सदस्यों को धन्यवाद दिया, जिसमें अन्य सदस्यों के साथ इसके अध्यक्ष लुसियानो नोबिली, एंटोनेला इंकर्टी और माटेओ लुइगी बियानची शामिल थे। डोल्मा ने तिब्बत के लिए विभिन्न अन्य जिम्मेदारियों के दौरान भी आगे उनसे अपना समर्थन जारी रखने का आग्रह किया। संसदीय समूह के पूर्व सदस्यों ने उनके भाव की सराहना की और आने वाले सभी वर्षों के लिए तिब्बत के साथ रहने का आश्वासन दिया।

बैठक के बाद, कालोन ने रोम स्थित तिब्बत समर्थक समूहों और तिब्बत के दोस्तों के साथ एक संवादात्मक बैठक की। बैठक में आसपास के तिब्बती बौद्ध केंद्रों के निवासी भिक्षुओं सहित कई स्थानीय तिब्बती भी शामिल हुए।

प्रतिनिधि थिनले चुक्की के साथ कालोन ३०सितंबर को यूरोप स्थित तिब्बती संघों की तीसरी वार्षिक आम बैठक के लिए मिलानो की यात्रा करने वाली हैं।

◆ कालोन नोरज़िन डोल्मा दक्षिण टायरॉल के राष्ट्रपति से मिली; इटली में यात्रा संपन्न

tibet.net, ०५ अक्टूबर, २०२२

इटली। दक्षिण टायरॉल के राष्ट्रपित श्री अर्नो कोम्पात्शर ने ०३अक्तूबर को तिब्बती प्रतिनिधि थिनले चुक्की और तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष छेतन लिंगुनी के साथ डीआईआईआर कालोन नोरज़िन डोल्मा की अगवानी की। द्विपक्षीय बैठक के दौरान दोनों ने कई मुद्दों, विशेष रूप से चीन के नियंत्रण वाले तिब्बत की स्थिति पर बातचीत की।
तिब्बत की वर्तमान स्थिति की जानकारी देते हुए कालोन नोरज़िन डोल्मा ने चीनी कट्टर नीतियों और तिब्बती संस्कृति और अस्मिता के चीनीकरण पर गहरी चिंता व्यक्त की। तिब्बतियों की धार्मिक स्वतंत्रता को कम करने वाले सीसीपी के अधिनायकवादी उपायों और पुनर्जन्म की सदियों पुरानी तिब्बती बौद्ध प्रथा में हस्तक्षेप करने की चीनी नीतियों पर जोर देते हुए कालोन नोरज़िन डोल्मा ने चीन को तिब्बती धार्मिक मामलों में दखल देने से रोकने के लिए ठोस प्रयास करने का आग्रह किया। इसके अलावा, कालोन ने उन परियोजनाओं के लिए समर्थन मांगा, जो निर्वासित तिब्बती समुदाय का और सशक्तिकरण करेंगे।
राष्ट्रपति कोम्पात्शर ने तिब्बत और तिब्बती लोगों के लिए दक्षिण टायरॉल के निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया। उन्होंने तिब्बत के धार्मिक मामलों में दखल देने वाले चीन के कदम को 'अस्वीकार्य' बताया और कहा कि धार्मिक मामलों में 'कोई विदेशी ताकत हस्तक्षेप नहीं कर सकती। वित्तीय सहायता के संबंध में राष्ट्रपति कोम्पात्शर ने परियोजनाओं के कार्यान्वयन को साकार करने में मदद करने के लिए संबंधित भागीदारों की पहचान की और उस पर बातीचीत को आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया।
रोम, मिलान और पेरुगिया में कालोन नोरज़िन डोल्मा की मिलनेवालों की सूची में पूर्व सीनेटर रॉबर्टो रैम्पी, संसद के नवनिर्वाचित सदस्य ऑन.ऑगस्टा मोंटारूली, तिब्बत के लिए इटली संसदीय समूह के पूर्व सदस्य ऑन. लुसियानो नोबिली, ऑन. एंटोनेला इंसर्टी और ऑन. मैटियो लुइगी बियांची, इटली के यूनियन बुद्धिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री फिलिपो सिआना समेत कई अन्य लोगों के साथ बैठकें शामिल थीं। कालोन के कई मौके पर कई मीडिया कार्यक्रम भी हुए।
कालोन नोरज़िन डोल्मा ने ०३अक्तूबर को इटली में अपनी मुलाकातों का दौर सफलतापूर्वक पूरा किया और उसी दिन जिनेवा, स्विट्जरलैंड पहुंचीं।

◆ इंग्लैंड में कंजर्वेटिव पार्टी सम्मेलन में पहली बार तिब्बत वार्ता आयोजित की गई

tibet.net, ०६ अक्टूबर, २०२२

लंदन। ब्रिटेन के किसी सत्तारूढ़ दल के सम्मेलन स्थल में पहली बार तिब्बत पर वार्ता आयोजित की गई। इसका आयोजन ब्रिटेन स्थित तिब्बत समर्थक दो बहन संगठनों- तिब्बत हाउस ट्रस्ट और तिब्बत कार्यालय द्वारा किया गया।
बर्मिंघम में सोमवार, ०३अक्तूबर २०२२को कंजर्वेटिव पार्टी सम्मेलन के ९०मिनट के फ्रिंज कार्यक्रम के दौरान 'एक अनसुलझा संघर्ष- तिब्बत क्यों

मायने रखता है (व्हाई तिब्बत मैटर्स- एन अनरिसोल्व्ड कंफ्लिक्ट)' विषय पर चर्चा की गई। इस चर्चा में तीन प्रख्यात वक्ताओं में से प्रत्येक ने इंग्लैंड की सरकार और यहां के लोगों के लिए तिब्बत की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए एक विशिष्ट विषय पर ध्यान केंद्रित किया। इस चर्चा में अनेक सांसद, विधायक, शोधकर्ता और कार्यकर्ता दर्शक के तौर पर उपस्थित थे और बातचीत में हिस्सा लिया। तिब्बत कार्यालय, लंदन के सचिव लोचो समतेन ने सत्र का संचालन किया।

प्रतिनिधि सोनम फ्रैसी ने तिब्बत के भीतर वर्तमान दमनकारी स्थिति पर प्रकाश डालते हुए तिब्बतियों के मध्यम मार्ग दृष्टिकोण (एमडब्ल्यूए) को चीन-तिब्बत संघर्ष को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने का आदर्श साधन बताया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार से तिब्बत को चीन का हिस्सा मानने वाले २००८ के अपने बयान को वापस लेने की अपील की।

दूसरे वक्ता पूर्व लिबरल पार्टी के सांसद नॉर्मन बेकर थे, जिन्होंने गठबंधन सरकार के दौरान परिवहन मंत्री के रूप में कार्य किया था। वह लंबे समय से तिब्बत के कट्टर समर्थक और तिब्बत सोसाइटी के पूर्व अध्यक्ष हैं। तिब्बत सोसाइटी, स्वतंत्र तिब्बत में रहने वाले ब्रिटिश सरकार के पूर्व अधिकारियों द्वारा पश्चिम में स्थापित पहला तिब्बत समर्थन समूह है। बेकर परम पावन दलाई लामा से भी कई बार मिल चुके हैं। ब्रिटेन, चीन और तिब्बत के मुद्दों से अच्छी तरह वाकिफ होने के कारण बेकर ने २०वीं सदी की शुरुआत में ब्रिटिश सरकार के संबंध और तिब्बत के साथ द्विपक्षीय संधियों की ओर इशारा करते हुए अपनी बात की शुरुआत की, जिसमें चीन कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा था। उन्होंने गठबंधन सरकार के दौरान अपनी मंत्रिस्तरीय भूमिका में पीआरसी सरकार से निपटने के अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में भी बात की। दिलचस्प बात यह है कि बीजिंग द्वारा परम पावन दलाई लामा से मिलने को लेकर ब्रिटेन को ठंडे बस्ते में डालने के बाद चीन में ब्रिटिश प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने वाले बेकर पहले व्यक्ति थे। उन्होंने चीन को इतना ज्यादा क्रोधित होते हुए महसूस किया कि ब्रिटिश सरकार बदले में कुछ भी प्राप्त किए बिना चीन सरकार को खुश करने के लिए झुक गई थी। इसके बाद २००८ में उपरोक्त स्थिति में बदलाव की स्थिति बनने लगी। उन्होंने ब्रिटिश संसद में तिब्बत मुद्दे को जीवित रखने के लिए तिब्बत पर ब्रिटिश सर्वदलीय संसदीय समूह के सह-अध्यक्ष, कंजर्वेटिव पार्टी के सांसद टिम लॉटन और दक्षिणपंथी सांसद माननीय इयान डंकन स्मिथ और उनके जैसे अन्य जैसे कंजर्वेटिव सांसदों को भी श्रद्धांजलि दी। उन्होंने एक अधिक सकारात्मक बात कहते हुए अपने वक्तव्य को समाप्त किया कि ज्वार हाल ही में ब्रिटिश सरकार द्वारा चीन के हिंकले परमाणु ऊर्जा स्टेशन और हुआवेई आदि पर पर प्रतिबंधों के माध्यम से पीआरसी पर कदम पीछे खींचने के लिए बाध्य किया जा रहा है। इसके साथ ही पहले के हालात बदल रहे हैं।

क्या चीन की सरकार में बड़े बदलाव के साथ वहां अराजकता की स्थिति पैदा हो सकती है, इस सवाल पर एमपी बेकर ने अपने मजबूत नेटवर्क और संगठनात्मक क्षमता के माध्यम से ऐसी स्थिति में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की क्षमता पर विश्वास व्यक्त किया, जिसे उन्होंने भारत स्थित सीटीए की अपनी यात्रा के दौरान देखा था।

पेरिस के शोधकर्ता तेनज़िन चोएक्यी ने पूरी दुनिया के लिए तिब्बत के पर्यावरण की प्रासंगिकता और तिब्बती पठार पर घटते ग्लेशियरों और पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से वैश्विक समुदाय को होने वाले संभावित खतरों पर बड़ी शिद्दत से अपनी बात रखी।

यह आयोजन तिब्बत हाउस ट्रस्ट, ब्रिटेन के सचिव तेनज़िन ज्ञायधन के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ।

इससे पहले दिन में प्रतिनिधिमंडल ने पत्रक वितरित करके, सूचना स्टालों पर जाकर और सम्मेलन स्थलों पर अन्य कार्यक्रमों में भाग लेकर तिब्बत की पैरवी करने का पूरा प्रचार किया था। उन्होंने एमबीई एमपी टॉम तुगेंदत, राज्य सचिव (सुरक्षा) से मुलाकात कर उनका समर्थन मांगा और उन्हें धन्यवाद दिया।

◆ चीनी संपर्क अधिकारी सुल्त्रिम ग्यात्सो ने सिटीजन पॉवर इनिशिएटिव फॉर चाइना के साथ बैठक की

tibet.net, ११ अक्टूबर, २०२२

वाशिंगटन डीसी। वाशिंगटन स्थित तिब्बत कार्यालय के चीनी संपर्क कार्यालय ने सहयोग को मजबूत करने और भविष्य की गतिविधियों के बारे में चर्चा करने के लिए अमेरिका स्थित चीनी शोधकर्ताओं के साथ एक बैठक आयोजित की।

संपर्क अधिकारी सुल्त्रिम ग्यात्सो ने पिछले बुधवार को सिटीजन पॉवर इनिशिएटिव फॉर चाइना के निदेशक यांग जियानली, शोधकर्ता के ज़िया, डॉ. हान लियानचाओ और इसके सदस्यों के साथ हुई बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में चीन-तिब्बत संघर्ष से संबंधित चर्चा के बीच चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की २०वीं राष्ट्रीय कांग्रेस में इसके नेतृत्व में संभावित बदलावों पर भी चर्चा हुई।

परम पावन दलाई लामा द्वारा परिकल्पित मध्यम मार्ग नीति के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के संकल्प को दोहराते हुएप्रतिनिधि नामग्याल चोएदुप ने बीजिंग की व्यवस्थित और दमनकारी नीतियों का मुकाबला करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिब्बत के लिए सीटीए की निरंतर चलनेवाले एडवोकेसी अभियान से सभा को अवगत कराया। इसके अतिरिक्त, प्रतिनिधि ने दो समुदायों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए ओओटी के प्रयासों का आश्वासन देते हुए चीनी और तिब्बतियों के बीच संवाद कायम करने में सिटीजन पावर इनिशिएटिव्स फॉर चाइना से समर्थन की अपील की। उन्होंने चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने के लिए बातचीत को एकमात्र व्यवहार्य उपाय बताया और इसपर प्रकाश डाला।

निदेशक यांग जियानली ने परम पावन दलाई लामा से प्रेरित सिटीजन पावर इनिशिएटिव्स फॉर चाइना द्वारा वार्षिक गैर-नस्लीय और गैर-सांप्रदायिक युवा सम्मेलन की पहल के बारे में सभा को बताया। साथ ही ३०साल पहले परम पावन दलाई लामा के साथ अपनी मुलाकात और अपने जीवन पर उनके प्रभाव को याद किया। इसी तरह, शोधकर्ता के ज़िया ने तिब्बत की उन कहानियों को दोहराया जो उन्होंने चीन में कम्युनिस्ट पार्टी के स्कूलों में एक शिक्षक के रूप में अपने रोजगार के दौरान सुनी और देखी थीं और तिब्बत पर सीसीपी नेतृत्व के दृष्टिकोण से सभा को अवगत कराया।

इच्छित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सीसीपीके साइबर सुरक्षा कानून के प्रभाव और इसके बल पर मनमानी करने के बारे में बात करते हुए शोधकर्ता डॉ. हान लियानचाओ ने उपरोक्त चुनौती का मुकाबला करने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी बुद्धिमत्ता का समर्थन करने की बात की।

०६ अक्तूबर कोचीनी संपर्क अधिकारी सुल्त्रिम ग्यात्सोने भी आईपीके मीडिया और चीन यूरो वॉयस द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित वेबिनार में भाग लिया और चीन के भविष्य की रणनीति : शी जिनपिंग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की २०वीं राष्ट्रीय कांग्रेस पर चर्चा में शिरकत की। चीनी संपर्क अधिकारी ने तिब्बत में कोविड संकट के हालिया कुप्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए शी सरकार द्वारा तिब्बत की सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक पर्यावरण के बिगाड़ने पर प्रकाश डाला। उन्होंने परम पावन दलाई लामा और उनकी प्रतिबद्धताओं को चीनी विद्वानों और बुद्धिजीवियों समेत सभी प्रतिभागियों को सुनने और उससे परिचित होने के महत्व को भी रेखांकित किया।

वेबिनार में शी की समग्र नीति और उनके पिछले दो कार्यकालों के दौरान इसके प्रभावों पर गहन विचार-विमर्श किया गया, साथ ही चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की २०वीं राष्ट्रीय कांग्रेस के संभावित परिणामों पर चर्चा की गई, जो १६ अक्तूबर २०२२ को आयोजित होने वाली है।

◆ सीटीए प्रतिनिधिमंडल का आउटरीच कार्यक्रम यूरोप में चल रहा है

tibet.net, १२ अक्टूबर, २०२२

बर्लिन, जर्मनी। सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के नेतृत्व में एक सीटीए प्रतिनिधिमंडल इन दिनों यूरोपीय देशों- जर्मनी और बेल्जियम के आधिकारिक दौरे पर हैं। इस प्रतिनिधिमंडल में डीआईआईआर कालोन नोरज़िन डोल्मा, तिब्बत कार्यालय जिनेवा के प्रतिनिधि थिनले चुक्की शामिल हैं। साथ में एक तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल भी है,जिसमें सांसद सेर्ता सुल्त्रिम, कोंचोक यांगफेल, न्गोडुप दोर्जी और छेरिंग यांगचेन शामिल हैं। यूरोपीय देशों की इस यात्रा में प्रतिनिधिमंडल वहां के संसद सदस्यों, अधिकारियों और अन्य महत्वपूर्ण गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात करेगा। यह अंतरराष्ट्रीय मुलाक़ात कार्यक्रम फ्रेडरिक नौमैन फाउंडेशन फॉर फ्रीडम द्वारा आयोजित किया गया है।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग और निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्यों -सांसद सेर्ता सुल्त्रिम, कोंचोक यांगफेल, न्गोडुप दोर्जी और छेरिंग यांगचेन,सीटीए के वित्त अंतरिम सचिव तेनज़िन लेगडुप के साथ ओओटी जिनेवा में प्रतिनिधि थिनले चुक्की वाले तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल का ०९ अक्तूबर, २०२२ को म्यूनिख हवाई अड्डे पर म्यूनिख तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष और सदस्यों ने स्वागत किया।

सिक्योंग के नेतृत्व में सीटीए प्रतिनिधिमंडल ने बवेरियन स्टेट पार्लियामेंट के उपाध्यक्ष और संस्कृति और मीडिया के पूर्व मंत्री डॉ. वोल्फगैंग ह्यूबिस से मुलाकात की। संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने स्मृति चिन्ह के साथ अपील पत्र भेंट किया। बाद में ०९ अक्तूबर को प्रतिनिधिमंडल ने बर्लिन के लिए प्रस्थान करने से पहले म्यूनिख में तिब्बती समुदाय के साथ बैठक की। बर्लिन में सिक्योंग और तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने युवा उदारवादियों, जर्मनी के सबसे बड़े उदारवादी युवा संगठन और देश की फ्री डेमोक्रेटिक पार्टी (एफडीपी) की युवा शाखा के प्रतिनिधियों से मुलाकात की।

१०अक्तूबर को सांसद रत्सा सोनम नोरबू बर्लिन में सीटीए प्रतिनिधिमंडल में शामिल हुईं और उन्होंने एफएनएफ के सीईओ एनेट विट्टे और एफएनएफ के अधिकारियों से मुलाकात की, जिनमें अंतरराष्ट्रीय विभाग के प्रमुख डॉ. रेने क्लाफ, ग्लोबल के प्रमुख डॉ. मिशेला लिसोव्स्की और बर्लिन में एफएनएफ कार्यालय में थीम्स यूनिट और एशिया डेस्क के प्रमुख चार्ल्स डु विनेज शामिल थे।

दोपहर के भोजन की बैठक में सीटीए प्रतिनिधिमंडल ने जर्मन सांसद वैलेन्टिन एबेल से मुलाकात की और बैठक में सांसद के सहयोगी युवा उदारवादी आंद्रे लेहमन भी शामिल हुए। शाम को सिक्योंग के नेतृत्व वाले सीटीए प्रतिनिधिमंडल ने पूर्वी एशिया के आयुक्त डॉ. मार्टिन थुमेल और चीन के द्विपक्षीय और यूरोपीय संघ के संबंध विभाग के प्रमुख जोर्न बीबर्ट से मुलाकात की।

दोपहर में सीटीए प्रतिनिधिमंडल ने जर्मन संघीय संसद में संसदीय समूह के लिए मानवाधिकार और मानवतावादी सहायता के प्रवक्ता एमडीबी पीटर हेइड्ट और विदेशी संबंध (एशिया और चीन) समिति के सदस्य और तिब्बत के लिए जर्मन संसदीय समूह के सह-अध्यक्ष एमडीबी फ्रैंक मुलर-रोसेंट्रिट के साथ बैठक की। बैठक में गणमान्य व्यक्तियों को तिब्बत के अंदर वर्तमान गंभीर स्थिति के बारे में जानकारी दी गई। प्रतिनिधिमंडल ने उन्हें अपील पत्र, स्मृति चिन्ह और तथ्य पत्र भी भेंट किए। बैठक जर्मन संसद में आयोजित की गई थी।

◆ राजदूत डॉ. एलिस्का जिगोवा ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया

tibet.net, १५ अक्टूबर, २०२२

धर्मशाला। भारत में चेक गणराज्य की राजदूत डॉ. एलिस्का जिगोवा ने १४ अक्टूबर २०२२ को निर्वासित तिब्बती संसद में स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल से शिष्टाचार भेंट की।

अपने कक्ष में राजदूत का स्वागत करने के बाद स्पीकर ने तिब्बत और तिब्बतियों के प्रति अटूट समर्थन के लिए चेक गणराज्य का आभार व्यक्त किया और २०१४ में चेक गणराज्य में एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के अपने अनुभव के बारे में बात की। उन्होंने राजदूत को तिब्बती संसद की संरचना निर्वासन में तिब्बती संसद के कामकाज और कार्यक्रम के साथ ही चेक गणराज्य और यूरोप के अन्य देशों के तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल के आगामी दौरे के बारे में जानकारी दी। बातचीत के दौरान स्पीकर ने यूरोपीय संघ से एक तिब्बत समन्वयक नियुक्त करने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. ज़िगोवा ने गर्मजोशी से अपने स्वागत की सराहना की और तिब्बती मुद्दे के लिए चेक गणराज्य के निरंतर समर्थन को दोहराया और तिब्बत की भाषा, विरासत, धर्म और मानवाधिकारों के संरक्षण और सुरक्षा के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने का आश्वासन दिया। राजदूत ने आगे उल्लेख किया कि विशेष तिब्बत-चेक संबंध परम पावन दलाई लामा और चेक के पूर्व राष्ट्रपति वैक्लेव हावेल की विशिष्ट मित्रता से उपजा है।

◆ सांसद खेंपो कडा न्गेदुप सोनम और लोबसांग ग्यात्सो सिथर ने विधायक श्री के. महादेव से मुलाकात की

tibet.net, ०४ अक्टूबर, २०२२

बाइलाकुप्पी (कनार्टक)। १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद के कार्यक्रम के अनुसार सांसद खेंपो कडा न्गेदुप सोनम और लोबसांग ग्यात्सो सिथर ने केरल के तिब्बती निवासियों से मुलाकात की और कोच्चि में मेन-त्सी-खांग शाखा क्लिनिक का दौरा किया। उन्होंने डिकी लार्सो में स्कूलों, मठों और कार्यालयों का भी दौरा किया और वहां के निवासियों से मुलाकात की। सांसदों ने भी कर्नाटक विधानसभा के सदस्य श्री के. महादेव से शिष्टाचार मुलाकात की।

चेन्नई, ऑरोविले और पांडिचेरी की अपनी आधिकारिक यात्रा समाप्त करने के बाद सांसद ०२ सितंबर को केरल के लिए रवाना हुए। वहां पहुंचने पर स्थानीय समन्वयक न्गावांग चोएडन ने उनका स्वागत किया। उस दिन बाद में सांसदों ने तिब्बती बाजार का दौरा किया और वहां व्यापार कर रहे तिब्बतियों से बातचीत की। सांसदों ने अपनी सार्वजनिक बातचीत और प्रश्नोत्तर सत्र के बाद जनता की शिकायतों और चिंताओं को दर्ज किया।

३०सितंबर को सांसदों ने कोच्चि में स्थापित मेन-त्सी-खांग शाखा क्लिनिक का दौरा किया और इसके डॉ.क्टर और कर्मचारियों से मुलाकात की।

मैसूर में दिक्यी लार्सो सेटलमेंट ऑफिसर चेमी दोर्जी ने सांसदों का स्वागत किया।इसके बाद वे बायलाकुप्पी में डिक्यी लार्सो तिब्बती सेटलमेंट के लिए रवाना हुए। ०१ अक्टूबर २०२२ को सांसदों ने फोडरंग का दौरा किया।इसके बाद सांसदों ने ड्रिकुंग काग्यू थुप्टेन शेडुब जंगचुप्लिंग मठ, पेमा सांग न्गाग छोखोर और ताशी ल्हुन्पो मठ का दौरा किया। सांसदों ने ताशी ल्हुन्पो मठ के मठाधीश भिक्षु ज़ेक्याब रिनपोछे से भी मुलाकात की।

सांसदों ने संभूता तिब्बती स्कूल का भी दौरा किया और वहां के छात्रों और शिक्षकों से शिक्षा के महत्व पर बात की। भारत-तिब्बत मैत्री संघ ने तिब्बती सांसदों के सम्मान में रात्रिभोज का आयोजन किया, जिसमें सांसद गेशे अतोंग रिनचेन ग्यालत्सेन और वांगड्यू दोरजी शामिल थे, जो लुगसम तिब्बती बस्ती का दौरा कर रहे थे। रात्रिभोज के दौरान उन्होंने तिब्बत और तिब्बतियों से जुड़े मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श किया।

०२ अक्तूबर को सांसदों ने दिक्यी लार्सो की आम जनता को संबोधित किया, जिसमें सांसद खेंपो कडा न्गेडुप सोनम ने परम पावन दलाई लामा की महान उपलब्धियों, तिब्बत के अंदर तिब्बतियों पर चीनी सरकार द्वारा थोपी गई नीतियों और १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद के चौथे सत्र में पारित किए गए प्रस्तावों पर बात की। जबकि सांसद लोबसांग ग्यात्सो सिथर ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर तिब्बत के मुद्दे की स्थिति पर बात की और जनता द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब दिए। उसी दिन दोपहर में उन्होंने चाकुर बस्ती की आम जनता से उपरोक्त विषयों पर बात की।

इसके बाद सांसदों ने कर्नाटक विधान सभा के सदस्य श्री के. महादेव से शिष्टाचार भेंट की और उन्हें बुद्ध की एक थंका (पेंटिंग) भेंट की।

०३ अक्तूबर को सांसदों ने डिक्की लार्सो में सहकारी समिति कार्यालय, क्षेत्रीय तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन कार्यालय, शिविर कार्यालय, डेयरी उत्पादन कार्यालय, किंडर गार्डन, त्सो जे अस्पताल और अन्य स्थानों का दौरा किया। सेटलमेंट ऑफिस और तिब्बती कोऑपरेटिव सोसाइटी ने संयुक्त रूप से आने वाले सांसदों के सम्मान में रात्रिभोज का आयोजन किया और उन्हें व्हाइट तारा का थंका भेंट किया।

◆ आईटीसीओ ने दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म में तिब्बत जागरूकता सह ब्रीफिंग सत्र का आयोजन किया

tibet.net, १३ अक्टूबर, २०२२

दिल्ली। भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ), नई दिल्ली ने १२ अक्टूबर २०२२को दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म में तिब्बत जागरूकता सह ब्रीफिंग सत्र का आयोजन किया। इस सत्र का नेतृत्व आईटीसीओ की समन्वयक (कार्यवाहक) ताशी देकी ने कार्यक्रम अधिकारी चोनी छेरिंग के साथ किया।

इस सत्र में भारत तिब्बत समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा मीडिया छात्रों के लिए तिब्बत पर आयोजित वार्षिक आउटरीच कार्यक्रम के तहत १९ से २१ अक्टूबर २०२२तक धर्मशाला के आगामी शैक्षिक यात्रा कार्यक्रम में प्रतिभागिता करने वाले दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म के छात्रों और संकाय सदस्यों ने हिस्सा लिया।

शैक्षिक यात्रा कार्यक्रम का स्वागत और समर्थन करनेवाले दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म के निदेशक प्रो. जे.पी. दुबे की उपस्थिति से सत्र की शोभा बढ़ गई। प्रो. दुबे ने शुरुआत में ही इसका स्वागत किया था। सत्र के दौरान संकाय सदस्य रजत अभिनव और शिप्रा राज भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर आईटीसीओ की समन्वयक (कार्यवाहक) ताशी देकी ने छात्रों और संकाय सदस्यों को भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय के बारे में जानकारी दी। उन्होंने तिब्बत के अंदर की मौजूदा स्थिति, भारत-तिब्बत संबंधों और भारत के लिए तिब्बत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए तिब्बत के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

आईटीसीओ के कार्यक्रम अधिकारी चोनी छेरिंग ने प्रतिभागियों को आगामी शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। उन्होंने उन्हें तीन दिवसीय कार्यक्रम, कार्यक्रम के दौरान क्या करें और क्या न करें और कार्यक्रम के संबंध में तैयारियों के बारे में संक्षेप में बताया।

शैक्षिक यात्रा कार्यक्रम के उद्देश्य पर भी प्रतिभागियों को विस्तार से बताया गया, जिसके बाद प्रश्नोत्तर का आयोजन किया गया। इसमें छात्र तिब्बत के बारे में जानने को बहुत उत्सुक दिखे और उन्होंने कई सवाल उठाए, जिनका आईटीसीओ की टीम ने जवाब दिया।

तिब्बत के बारे में जानकारी रखने के लिए प्रतिभागियों को तिब्बत से संबंधित किताबें और पर्चे भी वितरित किए गए।

समन्वयक (कार्यवाहक) ताशी देकी ने सत्र आयोजित करने का अवसर प्रदान करने के लिए प्रोफेसर जे.पी. दुबे के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया और उनको खटक (तिब्बती सफेद दुपट्टा) और तिब्बत पर किताबें भेंट की। इसके साथ ही सत्र का समापन हुआ।

◆ डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग और सांसद गेशे मोनलम थरचिन ने सिक्किम के वन और पर्यावरण मंत्री कर्मा लोदय भूटिया से शिष्टाचार भेंट की

tibet.net, २० अक्टूबर, २०२२

गंगटोक, सिक्किमासिक्किम में स्थानीय तिब्बती विधानसभा की कार्यशाला के लिए गंगटोक आईं निर्वासित तिब्बती संसद की उपाध्यक्ष डोल्मा छेरिंग तेखांग और सांसद गेशे मोनलम थरचिन ने १९ अक्टूबर २०२२ को गंगटोक में सिक्किम सरकार के माननीय वन और पर्यावरण मंत्री श्री कर्मा लोदय भूटिया से मंत्री के आवास पर शिष्टाचार मुलाकात की।

बैठक के दौरान, डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग और सांसद गेशे मोनलम थरचिन ने भारत और इसके लोगों, विशेष रूप से सिक्किम राज्य को तिब्बत के मुद्दे के लिए लंबे समय तक समर्थन देने के लिए आभार व्यक्त किया और उन्हें तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने गंगटोक में रहने वाले तिब्बतियों के लिए उनके समर्थन का भी आग्रह किया, जिस पर मंत्री ने उनके निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया। उपाध्यक्ष डोल्मा छेरिंग तेखांग और सांसद गेशे मोनलम थरचिन द्वारा मंत्री को तिब्बत पर एक स्मारिका और पुस्तकें भी भेंट की गई।

बैठक में डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग और सांसद गेशे मोनलम थरचिन के साथ गंगटोक स्थानीय तिब्बती विधानसभा के अध्यक्ष जिनपा फुंट्सोक, गंगटोक के सेटलमेंट अधिकारी ल्हाकपा छेरिंग और गंगटोक स्थानीय तिब्बती विधानसभा के पूर्व सदस्य छेरिंग टोपग्याल उपस्थित रहे।

◆ जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने को लेकर एलटीए की पांच दिवसीय कार्यशाला संपन्न

tibet.net, २४ अक्टूबर, २०२२

गंगटोक, सिक्किम। स्थानीय तिब्बती विधानसभाओं, सेटलमेंट अधिकारियों, स्थानीय तिब्बती विधानसभाओं के सदस्यों के सेटलमेंट अधिकारियों और गंगटोक, रवंगला, दार्जिलिंग, कलिम्पोंग और सोनादा के तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन के क्षेत्रीय सदस्यों के बीच जमीनी स्तर पर लोकतंत्र की मजबूती का प्रशिक्षण देने के लिए निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा सिक्किम में पांच दिवसीय कार्यशाला २१अक्तूबरको सफलतापूर्वक संपन्न हो गई।

कार्यशाला के पहले दो दिन के लिए प्रशिक्षक के तौर पर निर्वासित तिब्बती संसद की उपाध्यक्ष डोल्मा छेरिंग तेखांग और सांसद गेशे मोनलम थरचिन थे। उन्होंने कार्यशाला के लिए पंजीकृत प्रतिभागियों को संसदीय प्रक्रियाओं और बजट नियमों के बारे में शिक्षण- प्रशिक्षण दिया। जबकि कार्यशाला का तीसरा दिन कार्यशाला के अंतिम दो दिनों में आयोजित होनेवाले छद्म सत्र (मॉक सेशन) तैयार करने को समर्पित रहा।

उपरोक्त दोनों प्रशिक्षकों की देखरेख में छद्म सत्र उचित संसदीय प्रक्रियाओं और शासनादेशों का पालन करते हुए शुरू हुआ। दो दिवसीय मॉक सत्र की अध्यक्षता बारी-बारी से पहले उल्लेखित व्यवस्थित बस्तियों और यत्र-तत्र बसे हुए तिब्बती समुदायों के स्थानीय तिब्बती विधानसभाओं के अध्यक्षों द्वारा की गई।

प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से एकजुटता संकल्प, मृत्यु पर शोक प्रस्ताव, तारांकित प्रश्न, ध्यानाकर्षण प्रस्ताव, वार्षिक रिपोर्ट, विधायी संशोधन, निजी सदस्य विधेयक, विनियोग विधेयक और बजट से संबंधित अन्य दस्तावेज तैयार किए। वे वास्तविक स्थानीय विधानसभा सत्र की तरह कार्यशाला को चलाने के लिए उत्साहित थे। असेम्बली की कार्यवाही को बेहतर बनाने में आवश्यक सुझाव देने के लिए दोनों प्रशिक्षकों ने सत्रों के बीच-बीच में हस्तक्षेप किया।

समापन समारोह में डिप्टी स्पीकर ने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी के लिए सराहना की और साथ ही, स्थानीय तिब्बती विधानसभा में पारित प्रस्तावों पर अडिग रहने और उन्हें वास्तविक अभ्यास में लाने के महत्व को दोहराया। उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को सलाह दी कि वे चीन के आक्रमण से पहले तिब्बत के एक स्वतंत्र देश होने के ऐतिहासिक तथ्यों और तिब्बत के अंदर की वर्तमान गंभीर स्थिति के बारे में जागरूकता फैलाने में अपना योगदान दें। डिप्टी स्पीकर ने पांच तिब्बती बस्तियों और सिक्किम और पश्चिम बंगाल में बिखरे हुए तिब्बती समुदायों के प्रतिभागियों को सलाह दी कि वे अपने- अपने राज्य की विधानसभाओं में तिब्बत से संबंधित मामलों को उठाने के लिए सामूहिक प्रयास करें।

सांसद गेशे मोनलम थरचिन ने भी कार्यशाला के दौरान विशेष रूप से मॉक सत्र में, प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी की सराहना की और उन्हें पांच दिवसीय कार्यशाला में पढ़ाए जाने वाले बजट और संसदीय प्रक्रिया के नियमों और विनियमों के बारे में हमेशा पढ़ते रहने के लिए कहा। उन्होंने प्रतिभागियों को कार्यशाला के दौरान अर्जित ज्ञान को दूसरों के साथ भी साझा करने की सलाह दी।

एक संक्षिप्त समापन समारोह के बाद स्थानीय तिब्बती विधानसभा के सदस्यों के लिए जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने को लेकर आयोजित कार्यशाला सफलतापूर्वक संपन्न हुई, जिसमें प्रतिभागियों ने कार्यशाला के आयोजन की सराहना की और भविष्य में इस तरह की और कार्यशालाओं का आयोजन करने की आग्रह किया।

यह १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा अपने गठन के बाद से आयोजित चौथी एलटीए कार्यशाला है। इससे पहले कि तीन एलटीए कार्यशालाएं क्रमशः धर्मशाला, ओडिशा और लद्दाख में आयोजित की जा चुकी हैं। एलटीए कार्यशालाओं का उद्देश्य प्रतिभागियों को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन, निर्वासित तिब्बतियों के चार्टर, बजट नीति, संसदीय सत्र की कार्यवाही, आम जनता से संबंधित मुद्दों को समझने और उठाने, उचित निर्णय लेने और सार्वजनिक कार्यालयों को जवाबदेह बनाने की क्षमता और अन्य विषयों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करके जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करना है।

◆ ऊटी में नीलगिरी तिब्बती शरणार्थी कल्याण संघ ने अमेरिकी कांग्रेस का स्वर्ण पदक मिलने की १५वीं वर्षगांठ मनाई

tibet.net, २४ अक्टूबर, २०२२

ऊटी। ऊटी में नीलगिरी तिब्बती शरणार्थी कल्याण संघ के ५८ परिवारों के सदस्यों ने परम पावन १४वें दलाई लामा को अमेरिकी कांग्रेस द्वारा स्वर्ण पदक से सम्मानित किए जाने की १५वीं वर्षगांठ मनाई। तिब्बती शरणार्थी कल्याण संघ के सदस्यों ने पिछले चार दशकों से अधिक समय से स्थानीय दुकानदारों द्वारा अतिक्रमण सहित दैनिक जीवन की जरूरतों की छिटपुट चुनौतियों से जूझते रहते हुए भी अपनी अलग पहचान स्थापित की है।

इस पवित्र अवसर में भाग लेने और नीलगिरी तिब्बती शरणार्थी कल्याण संघ के सदस्यों की शिकायतों को सुनने के लिए श्री जे.पी. उर्स और सीआरओ जिग्मे सुल्त्रिम १६ अक्तूबरको बेंगलुरु से मैसूर के रास्ते ऊटी के लिए रवाना हुए। हॉल में सुबह की प्रार्थना और औपचारिक कार्यक्रम में भाग लेने के बाद एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री तेम्पा धार्गे ने सभा का स्वागत किया और सदस्यों द्वारा सामना की जानेवाली समकालीन समस्याओं के बारे में सभा को जानकारी दी। अपनी संक्षिप्त प्रस्तुति में श्री जे.पी. उर्स ने अपने क्षेत्र में तिब्बतियों के सामने आने वाली किसी भी समस्या के लिए बिना शर्त समर्थन की पेशकश करते हुए इस उत्सव का हिस्सा बनने पर अपनी खुशी का इजहार किया।

इसके बाद, सीजीटीसी- आई के क्षेत्रीय संयोजक श्री जे.पी. उर्स, सीआरओ श्री जिग्मे सुल्त्रिम, एसोसिएशन के सदस्यगण- श्री तेम्पा धार्गे, सुश्री पासंग और जिग्मे को लोकसभा के माननीय सांसद श्री ए. राजा, के साथ शिकायतों को दिखाने के लिए क्षेत्र भ्रमण पर भेजा गया। क्षेत्र भ्रमण के दौरान स्थानीय दुकानदारों द्वारा किए अवैध अतिक्रमण एवं अन्य शिकायतों से अवगत कराया गया। माननीय सांसद ने उनकी शिकायतों को सुनने के बाद मामले का संज्ञान लिया और संबंधित अधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

प्रतिनिधिमंडल की टीम ने इसके बाद नीलगिरी के जिला कलेक्टर के कार्यालय का दौरा किया और डीसी की ओएसडी सुश्री उषा से मुलाकात की और उन्हें इस बारे में अवगत कराया। इसके बाद उसी दिन प्रो. वी. एंटो और श्री जे.पी. उर्स के नाम से इस मामले पर एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई और इन दोनों ने होटल तमिलनाडु, ऊटी में आयोजित मीडिया प्रतिनिधियों को संबोधित किया। प्रेस को संबोधित करते हुए श्री जे.पी. उर्स ने तिब्बती शरणार्थी कल्याण संघ द्वारा सामना की जा रही वर्तमान समस्याओं पर प्रकाश डाला और बताया कि इन दो वर्षों में वे कितने सहनशील बनकर चुप रहे हैं। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ऊटी के लोगों ने निश्चित रूप से ऊटी में इन तिब्बती शरणार्थियों के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया है, जबकि मुट्ठी भर स्थानीय दुकानदार उनके जीवन यापन की जरूरतों को पूरा करने में बाधा डाल रहे हैं, जिसके लिए स्थानीय प्रशासन के हस्तक्षेप और इस संबंध में मीडिया से समर्थन की आवश्यकता है।

श्री उर्स के साथ सुश्री पासंग ने स्थानीय तमिल भाषा में प्रेस के लोगों के साथ बातचीत की और मुट्ठी भर स्थानीय दुकानदारों द्वारा मौजूदा उपद्रव और बदमाशी को उजागर किया।

श्री जे.पी. उर्स ने ऊटी के लोगों, विशेष रूप से मीडिया के लोगों को धन्यवाद दिया, जो इस प्रेस आमंत्रण के बारे में सूचित किए जाने के अल्प सूचना के बावजूद बड़ी संख्या में आए। इस प्रेस कांफ्रेंस के बाद श्री उर्स और सीआरओ ऊटी से मैसूर के लिए रवाना हो गए। मैसूर में १८ अक्तूबर २०२२को डीसी मैसूर के साथ बैठक का समय तय किया गया है।

◆ तिब्बत नेटवर्क एशिया और ऑस्ट्रेलेशिया रिजनल बैठक में सीटीए वी-टैग पहल पर चर्चा

tibet.net, २६ अक्टूबर, २०२२

धर्मशाला। रविवार २३ अक्टूबर २०२२ को तिब्बत नेटवर्क एशिया और ऑस्ट्रेलेशिया रिजनल की बैठक धर्मशाला स्थित नोरबु हाउस में हुई।

धर्मशाला। रविवार, २३ अक्टूबर २०२२ को धर्मशाला स्थित नोरबू हाउस में आयोजित तिब्बत नेटवर्क एशिया और ऑस्ट्रेलेशियारिजनल बैठक के प्रतिभागियों को वॉलंटरी तिब्बत एडवोकेसी ग्रुप (वी-टीएजी) की पहल के बारे में बताया गया और इस बात पर चर्चा हुई कि तिब्बत समर्थक समूहों (टीएसजी) को कैसे इस पहल में शामिल किया जा सकता है।

बैठक के तीसरे दिन सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के तिब्बत एडवोकेसी अनुभाग की प्रमुख दुक्थेन क्यी ने प्रतिभागियों के लिए वी-टीएजी पर एक प्रस्तुति दी। उन्होंने वी-टीएजी की पृष्ठभूमि, आज के समय में तिब्बत के बारे में एडवाकेसी के महत्व और इसके उचित फल प्राप्त करने के लिए समान विचारधारा वाले समूहों, संगठनों और व्यक्तियों के बीच सहयोग के माध्यम से एडवोकेसी को मजबूत करने की आवश्यकता के बारे में संक्षेप में चर्चा की। एशिया और ऑस्ट्रेलेशियाक्षेत्रीय बैठक के प्रतिभागियों में ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान, ताइवान, ब्रिटेन और अमेरिका के विभिन्न तिब्बत समर्थक समूहों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ स्थानीय तिब्बती गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए। इनमें से कई वर्षों से सक्रिय रूप से तिब्बती आंदोलन से जुड़े हुए हैं और तिब्बत समर्थक अभियान चला रहे हैं। इसलिए, निर्वासन के ६०से अधिक वर्षों में तिब्बत समर्थक समूहों और अन्य संगठनों के अथक और अपार योगदान को स्वीकार करते हुए उन्होंने तिब्बत समर्थन के लिए एक समन्वित और मजबूत सहयोग की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। दुक्थेन क्यी ने वॉलंटरी तिब्बत एडवोकेसी ग्रुप के मुख्य घटकों में से एक होने के नाते तिब्बत समर्थक समूहों की भूमिका के बारे में भी बताया और बताया कि कैसे वे वी-टीएजी के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिब्बत के पक्ष में समर्थन को बढ़ा सकते हैं। सत्र वॉलंटरी तिब्बत एडवोकेसी ग्रुप के साथ टीएसजी के जुड़ाव पर कुछ सवालों के साथ समाप्त हुआ और कुछ ने भविष्य में इसका समर्थन करने और सहयोग करने के प्रति अपनी सकारात्मक रुचि भी साझा की।

दुक्थेन क्यी के साथ तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन के कर्मचारी तेनज़िन पाल्मो और रिनचेन भी थे।

शाम को अंतिम सत्र में माननीय सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का प्रतिभागियों के साथ एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया, जहां सिक्योंग ने तिब्बत के इतिहास की अच्छी समझ के साथ प्रभावी ढंग से तिब्बत की हिमायत करने पर जोर दिया।

एशिया और आस्ट्रेलेशिया क्षेत्रीय बैठक का आयोजन अंतरराष्ट्रीय तिब्बत नेटवर्क द्वारा किया गया था और तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन के टीएसजी संपर्क अधिकारी तेनज़िन पाल्मो ने २१-२३ अक्टूबर २०२२ तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लिया।

◆ अत्याचार के शिकार अल्पसंख्यकों के अस्तित्व को बचाने में मदद के लिए जापान को चीन के खिलाफ सख्त कदम उठाना चाहिए

'हमें इस लड़ाई में शामिल होने के लिए और लोगों की आवश्यकता है। हमें चीन के अंदर टूटी चीजों को फिर से बनाने के लिए जापानी विवेक का उपयोग करने की आवश्यकता है।'

-योशिको सकुराई, Japan-forward.com / जेसन मॉर्गन, ०९ अक्टूबर, २०२२

डाउनटाउन टोक्यो में शुक्रवार, २३ सितंबर, २०२२ को कुछ दर्जन लोगों की एक मामूली लेकिन उत्साही भीड़ ने इतिहास बनते हुए देखा। उस दिन केंद्रीय तिब्बत प्रशासन के प्रमुख के रूप में लोबसांग सांगेय के उत्तराधिकारी के रूप में भारत के धर्मशाला में मई २०२१ में सिक्योंग (राष्ट्रपति) चुने गए पेन्पा छेरिंग जापान की अपनी पहली यात्रा पर थे।

सिक्योंग छेरिंग ने २२ सितंबर को काशीवा, चिबा में १०० से अधिक हाईस्कूल के छात्रों और मोरालॉजी फाउंडेशन से जुड़े लोगों को संबोधित किया। इसके बाद २३ सितंबर को वह बंक्यो सिविक सेंटर में तिब्बत, उग्युर और दक्षिणी मंगोलिया पर आयोजित संगोष्ठी में थे। इस आयोजन ने खूब सुर्खियां बटोरीं।

निर्वासित तिब्बत के राष्ट्रपति की जापान यात्रा अपने आप में ऐतिहासिक है। लेकिन यह जनसंहारक चीन जनवादी गणराज्य (पीआरसी) में अल्पसंख्यक समूहों के प्रति जापान में बढ़ता समर्थन को भी दर्शाता है।

जापान तेजी से पीआरसी से निर्वासित अल्पसंख्यकों के अस्तित्व की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा हैऔर आगे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) द्वारा जातीय और धार्मिक समूहों के उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई के लिए मंच के रूप में कार्य कर रहा है।

चीन संस्कृति, धर्म, भाषा को नष्ट करने पर आमादा

२३ सितंबर को संगोष्ठी की शुरुआत जापान में परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि, तिब्बत हाउस के डॉ. छेवांग ग्याल्पो आर्य के संबोधन के साथ शुरू हुई। डॉ. आर्य ने वर्तमान में पीआरसी के अंदर कई अल्पसंख्यक समुदायों के सामने आने वाली वास्तविकता को स्पष्ट शब्दों में रखा।

डॉ. आर्य ने सीसीपी के कब्जे वाले क्षेत्रों के बारे में बात करते हुए कहा कि,'चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को तिब्बत, पूर्वी तुर्केस्तान और दक्षिणी मंगोलिया पर कब्जा किए हुए ७० साल से अधिक हो गए हैं।'

'लेकिन ये तीनों राष्ट्र अब भी पूरी तरह से चीन का हिस्सा नहीं बने हैं, क्योंकि सीसीपी का कब्जा अवैध, अन्यायपूर्ण और क्रूरतापूर्ण है। हम स्वतंत्र राष्ट्र हैं और चीनियों से बिल्कुल अलग हैं। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी हमारी संस्कृति, धर्म और भाषा को नष्ट करने की कोशिश कर रही है।'

दक्षिण मंगोलिया कांग्रेस के स्थायी उपाध्यक्ष ओल्हुनुद डाइचिन ने इस विनाश का कष्टकारी विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा, 'महान सांस्कृतिक क्रांति के दौरान ३०,०००से अधिक मंगोल मारे गए थे। सांस्कृतिक क्रांति के बाद दक्षिण मंगोलिया पूरी तरह से सीसीपी के नियंत्रण में आ गया। मंगोलियाई मातृभूमि के बड़े हिस्से को रेगिस्तान में बदल दिया गया। सीसीपी मंगोलियाई बच्चों को उन स्कूलों में दाखिला कराती है जहां उन्हें अपनी मूल भाषा बोलने से मना किया जाता है। मंगोलियाइयों को हान चीनी संस्कृति द्वारा जबरन आत्मसात किया जा रहा है। दक्षिण मंगोलिया में ७०से अधिक वर्षों से नरसंहार चल रहा है।'

मंचूरिया लगभग समाप्त हो चुका है

अपने संबोधन में राष्ट्रपति छेरिंग ने चीन में मंगोलियाई, उग्युर और अन्य उत्पीड़ित अल्पसंख्यकों के साथ अपनी और तिब्बतियों की एकजुटता का वादा किया।

उन्होंने कहा,'दक्षिण मंगोलिया में मंगोलियाई लोगों की आबादी अब सिर्फ १८प्रतिशत रह गई है। पीआरसी के अंदर यह मंगोलियाई अल्पसंख्यकों की सबसे संकटपूर्ण स्थिति है।'

राष्ट्रपति छेरिंग ने एक संस्कृति, भाषा और लोगों के रूप में मंचूरियन के लगभग समाप्त हो जाने पर भी अफसोस जाहिर किया।

राष्ट्रपति छेरिंग ने कहा,'पीआरसी के राष्ट्रीय झंडे पर अंकित पांच सितारों को चीन के अंदर पांच नस्लीय समूहों के प्रतिनिधि के तौर पर माना जाता है। लेकिन इनमें से अगर सबसे बड़ा सितारा हान चीनी मूल का प्रतिनिधित्व करने वाला है तो अन्य चार छोटे सितारे उग्युर, मंगोलियाई, मंचू और तिब्बतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि अब समय आ गया है कि इनमें से एक छोटे सितारे को हटा दिया जाए,क्योंकि मंचू लगभग समाप्त हो चुके हैं।'

राष्ट्रपति छेरिंग ने आगे कहा,'ऐसे समय में जब पूरी दुनिया बहुसंस्कृतिवाद को बढ़ावा दे रही है,केवल चीन एक ऐसा देश है जो एक देश,एक संस्कृति और एक भाषा को बढ़ावा दे रहा है।'

जापानी सांसदों को समझाया

दो दिन पहले २१ सितंबर को जापानी संसद (डायट) में राष्ट्रपति छेरिंग ने सांसदों को तिब्बत के अंदर के उन बोर्डिंग स्कूलों के बारे में बताया, जहां तीन साल की उम्र के ८०प्रतिशत तिब्बती बच्चे अपनी सांस्कृतिक और भाषाई विरासत से वंचित रखे जा रहे हैं। उन्होंने इस स्थिति को सांस्कृतिक संहार के रूप में वर्णित किया।

राष्ट्रपति छेरिंग ने कहा, 'तिब्बती बच्चों को सीसीपी का प्रचार करने के साथ ही तिब्बती के बजाय चीनी भाषा सीखने के लिए मजबूर किया जाता है, ताकि उनका मन बदल सके, ताकि अगले १५ से २०वर्षों में कोई तिब्बती न बच पाए।'

जापान उग्युर एसोसिएशन के अध्यक्ष उदय केरीमु ने २३ सितंबर की संगोष्ठी में समझाया कि कैसे सीसीपी उनके उग्युर लोगों की संस्कृति को मिटा रही है।

केरिमु ने कहा, 'लगभग २४ प्रतिशत उग्युर महिलाओं की जबरन नसबंदी की गई है। यह चीनी पृथकवास शिविरों में बड़ी संख्या में पुरुषों और महिलाओं को कैद रखने के अतिरिक्त की कार्रवाई है।'

केरिमू ने समझाया,'हत्या, यातना और बच्चों को उनके परिवारों से अलग करने सहित वहां नरसंहार के पांच तरीके अपनाए जा रहे हैं।'

उन्होंने आगे कहा,इनमें से सिर्फ एक तरीके का उपयोग करना भी नरसंहार के अपराध को साबित करता है,जबकि पूर्वी तुर्केस्तान में सीसीपी द्वारा सभी पांचों तरीके अपनाए जा रहे हैं।'

अब लड़ने का समय है

खुलेआम खरी-खरी बोलनेवाली विख्यात राजनीतिक विश्लेषक योशिको सकुराई ने भी २३ सितंबर को तिब्बत, उग्युर और दक्षिणी मंगोलिया पर हुई संगोष्ठी में अपनी बात रखी। सकुराई का संदेश छोटा और सीधा था- जापान को चीन के खिलाफ सख्त होना चाहिए और सीसीपी शासन से पीड़ित अल्पसंख्यकों का समर्थन करना चाहिए।

सकुराई ने कहा, 'जापान को अपनी रीढ़ मजबूत करने और चीनी सरकार द्वारा मानवाधिकारों के हनन की निंदा करने की जरूरत है।'उन्होंने आगे कहा,'जापान को उन लोगों को जितना संभव हो उतना समर्थन देना चाहिए,जो सीसीपी शासन के अत्याचारों के खिलाफ लड़ रहे हैं।'

सकुराई ने कहा,अभी भी बहुत काम करना बाकी है।

उन्होंने इस अवसर के महत्व को देखते हुए कहा,'यहां और भी बहुत से लोग होने चाहिए थे। 'सकुराई ने जोर देकर कहा कि जापान को तिब्बत, दक्षिणी मंगोलिया और उग्युरो के त्राहिमाम संदेश को अंतरराष्ट्रीय समुदाय तक पहुंचाने के लिए काम करना होगा।

शिंजो आबे से प्रेरणा लेने की जरूरत

उन्होंने जापान के दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे का भी जिक्र करते हुए कहा,'आबे साहब ऐसे लोग चाहते थे जो लड़ें।'सकुराई ने जापानी सरकार में पीआरसी के खिलाफ नरम लाइन लेना चाहनेवाले नौकरशाहों के खिलाफ अपने शासनकाल में आबे के संघर्षों को रेखांकित करते हुए कहा, 'आबे-साहब अब हमारे बीच नहीं हैऔर उनकी हत्या से पूरा जापान हिल गया है। लेकिन यही वह समय है जब हमें लड़ने का संकल्प लेना चाहिए। हमें इस लड़ाई में शामिल होने के लिए और लोगों की जरूरत है। हमें चीन के अंदर जो कुछ टूटा है, उसकी भरपाई करने में जापान के विवेक का उपयोग करने की जरूरत है।'अपना संबोधन समाप्त करती हुईसकुराई अपने दोस्त दिवंगत शिंजो आबे को याद करके भावुक हो गई। राष्ट्रपति छेरिंग अपनी सीट से खड़े हो गए और जैसे ही सकुराई उनका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ीं, उन्होंने गर्मजोशी से उन्हें गले लगाया और चीन के उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई में जापान को अपना समर्थन देने की घोषणा की। बीच टोक्यो में आयोजित इस कार्यक्रम मेंजापान और तिब्बत के नेताओं ने एक-दूसरे को दिलासा दिया और एक-दूसरे को संघर्ष जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

सकुराई ने यह भी कहा कि और अधिक किए जाने की आवश्यकता है।

जापान का महत्व

राष्ट्रपति छेरिंग ने अपनी टिप्पणी में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. आबे के प्रति सम्मान व्यक्त किया। राष्ट्रपति छेरिंग ने कहा, 'प्रधानमंत्री आबे के पास दुनिया के लिए एक बड़ा दृष्टिकोण था। मैं उन्हें श्रद्धांजलि देता हूं।'

छेरिंग ने तिब्बतियों, उग्यूरो, मंगोलियाई, हांगकांगवासियों और सीसीपी द्वारा सताए गए अन्य लोगों के समर्थन में खड़े होने के लिए सकुराई की भी सराहना की।

सकुराई की एकजुटता के आह्वान को दोहराते करते हुए उन्होंने दर्शकों को याद दिलाया कि 'चीन के कई कमजोर बिंदु हैं।'उन्होंने जापान के लोगों से आग्रह किया कि वे चीन से न डरें। राष्ट्रपति छेरिंग ने कहा कि,'चीन दुनिया में एकमात्र ऐसा देश है जो राष्ट्रीय रक्षा की तुलना में आंतरिक सुरक्षा पर अधिक खर्च करता है।'

राष्ट्रपति छेरिंग ने कहा, 'हम मजबूत हैं, हम लोकतंत्र, शांति और मानवाधिकारों के लिए लड़ रहे हैं।'उन्होंने आशा व्यक्त की कि जापानी लोग अपने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. आबे की विरासत को जारी रखेंगे और दुनिया में सुमति और शांति बनी रहेगी।

जापानी राजनीतिक जगत सुनता है

इसके बाद तिब्बती राष्ट्रपति ने संगोष्ठी में उपस्थित जापान के तिब्बत समर्थक राजनीतिक जगत के सदस्यों को धन्यवाद दिया। उदाहरण के लिएहकुबुन शिमोमुरा, जापान में प्रतिनिधि सभा के सदस्य हैं और तिब्बत के प्रबल समर्थक हैं।

संगोष्ठी में जापान-उग्युर पार्लियामेंटेरियन लीग (निहोन-उइघुर कोक्कई जिन रेनमेई) के सदस्यसांसद हिरोमी मित्सुबिशी और तिब्बत के लिए ऑल पार्टी जापानी पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप (निहोन-तिब्बत कोक्कई जिन रेनमेई) के सदस्य अकिमासा इशिकावा भी उपस्थित थे।

डायट के पूर्व सदस्य और सेव तिब्बत नेटवर्क के अध्यक्ष माकिनो सेशु भी संगोष्ठी में उपस्थित थे। राष्ट्रपति छेरिंग ने उन्हें तिब्बत का 'पुराना मित्र' कहा। संगोष्ठी में आगत श्रोताओं के सम्मुख अपनी संक्षिप्त टिप्पणी मेंमाकिनो ने कहा कि राजनेताओं के लिए पूरे कार्यक्रम तक रुकना दुर्लभ होता है, लेकिन यह कि राजनीतिक नेता राष्ट्रपति छेरिंग को सुनने के लिए इकट्ठे हुए और अन्य वक्ताओं में 'तिब्बत के लिए हार्दिक प्रेम' था।

उन्होंने जोर देकर कहा कि चीन के लोग भी कम्युनिज्म की तुलना में स्वतंत्रता और लोकतंत्र के प्रति बहुत अधिक सम्मान रखते हैं, इस प्रकार वे उन सर्वमान्य प्रतिज्ञाओं पर जोर देते हैं जो राष्ट्रीयताओं से उपर उठकर मानवाधिकारों की खोज में लोगों को एकजुट करते हैं।

सीधे ऐतिहासिक रिकॉर्ड स्थापित करना

संगोष्ठी में एक श्रोता ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान-तिब्बत संबंधों को लेकर प्रश्न पूछा। डॉ. आर्य ने स्पष्ट किया किजब जापानी इंपीरियल आर्मी ने बर्मा (अब म्यांमार) में एक रणनीतिक पुल को नष्ट कर दिया, जिसका उपयोग मित्र देशों की सेनाओं द्वारा चीन को सैन्य गोला-बारूद पहुंचाने के लिए किया जाता था, तो अमेरिका और ब्रिटेन की सरकारों ने तिब्बत से अनुरोध किया कि वह हथियारों को तिब्बत से चीन तक जाने की अनुमति दे।

हालांकि, तिब्बती सरकार ने युद्ध को लेकर अपने तटस्थ रुख पर जोर दिया और बताया कि तिब्बतएक शांतिपूर्ण बौद्ध राष्ट्र होने के नातेअपनी भूमि पर हिंसा की सामग्री की अनुमति नहीं दे सकता।

यह घटना दो महत्वपूर्ण बिंदुओं को दर्शाती है।

सबसे पहलेयह साबित करता है कि उस समय तिब्बत एक स्वतंत्र राष्ट्र था। अन्यथा, मित्र राष्ट्रों की सेना और चीन को तिब्बती क्षेत्र को पार करने के लिए तिब्बती सरकार से अनुमति का अनुरोध करने की कोई आवश्यकता नहीं होती।

दूसरा, जब दुनिया लड़ने में व्यस्त थीतब तिब्बत ने युद्ध में भाग लेने से परहेज किया और शांति और सुलह की वकालत की। अगर दुनिया ने तिब्बती संदेश का पालन किया होता तो आज हम एक बेहतर दुनिया बना सकते थे। दुर्भाग्य सेदुनिया ने कम्युनिस्टों के साथ साठ-गांठ की और शांति और अहिंसा का उपदेश देने वाले देश को ही नष्ट हो जाने दिया।

डॉ. आर्य ने कहा कि जापान और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को इस ऐतिहासिक घटना पर विचार करने और तिब्बत में स्वतंत्रता और न्याय बहाल करने के लिए मिलकर काम करने की जरूरत है।

◆ चीन में पार्टी कांग्रेस के बाद 'अपराधों पर नकेल'के १०० दिन और तिब्बत

savetibet.org, १२ अक्टूबर, २०२२

चीन के सुरक्षा मंत्रालय ने समाज में महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों, दिव्यांगों और कमजोर वर्गों के खिलाफ होनेवाले अपराधों से संबंधित अवैध गतिविधियों पर प्रहार करने के लिए २५ जून २०२२ को 'हंड्रेड डेज़ एक्शन (कार्रवाई के सौ दिन)'नाम से १००दिवसीय कार्रवाई शुरू की। दरअसल १०जून को हेबेई प्रांत के तांगशेन शहर के लुबेई जिले में चार महिलाओं पर हमले के खिलाफ कार्रवाई करने में पुलिस की निष्क्रियता पर लोगों के आक्रोश की खबरें आने के बाद सुरक्षा एजेंसियों की यह कार्रवाई अपराधी गिरोहों को निशाना बनाने वाले अभियान के तौर पर चलने लगी। हालांकि,यह अभियान आगामी १६ अक्तूबर से शुरू हो रही चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की २०वीं राष्ट्रीय कांग्रेस के मद्देनजर धीरे-धीरे 'शांति स्थापित' करनेवाला अभियान भर बनकर रह गया। २०वीं राष्ट्रीय कांग्रेस के साए में तिब्बत में पिछले महीनों में स्पष्ट रूप से राजनीति से प्रेरित कई गिरफ्तारियों की सूचनाएं मिली हैं।

हर पांच साल में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय कांग्रेस में शासन की योजनाओं और प्राथमिकताओं पर चर्चा होगी। बैठक के दौरानशी जिनपिंग को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव के रूप में एक अभूतपूर्व तीसरा कार्यकाल दिया जानेवाला है।

अपराध के खिलाफ १०० दिवसीय अभियान २५ जून, २०२२ को शुरू हुआ और तदनुसार इसे पिछले सप्ताह समाप्त होना था। इसका ध्यान सामूहिक अपराधों से लेकर तथाकथित 'अलगाववादी' गतिविधियों तक पर नकेल कसने पर केंद्रित है। अभियान के दौरानदलाई लामा की तस्वीरें रखने या विदेशों में संपर्क रखने या वहां किसी परिजन के साथ जानकारी साझा करने के लिए कई तिब्बतियों को कथित तौर पर गिरफ्तार किया गया है।

१००दिनों के अभियान से पता चलता है किएक बार फिरचीनी अधिकारी मनमाने ढंग सेअंधाधुंध तरीके से और बिना किसी जवाबदेही के तिब्बत के अंदर तिब्बतियों की स्वतंत्रता को कुचलने के लिए एक अस्पष्ट मिशन चला रहे हैं। यह १००दिवसीय कार्रवाई और तिब्बतियों को नियंत्रित करने और चुप कराने के इसके प्रयास पहले से ही २०वीं पार्टी कांग्रेस के मद्देनजर सुरक्षा और स्थिरता रखरखाव योजना में परिवर्तित और रूपांतरित हो चुके हैं।

चीनी सरकार ने कांग्रेस की तैयारियों से लिए पहले से अपनाई रणनीतियों से हटकर कठोर भाषा और स्पष्ट रूप से अपने इरादे बता दिए हैं जो स्पष्ट रूप से 'अलगाववादियों', 'दलाई गिरोह'और 'चीन विरोधी पश्चिमी ताकतों'की ओर उंगली उठाती है। इसके लिए राजनीतिक और कानूनी तंत्र के उपयोग पर जोर देने को लेकर इसने अस्पष्ट और सामान्य भाषा का इस्तेमाल किया है। इसमें कहा गया है कि, 'इस बात की सख्त निगरानी रखी जाए कि केंद्र सरकार को कोई परेशानी नहीं हो, कोई अराजकता नहीं फैले। इस बारे में छोटी से छोटी बातों पर भी गंभीरता से निरीक्षण और पर्यवेक्षण किया जाए और प्रमुख क्षेत्रों परनजर रखें। किसी भी तरह की प्रत्यक्ष और परोक्ष समस्याओं का समयबद्ध तरीके से पता लगाएं और तुरंत उसका समाधान करें। साथ ही बड़ी कठोर अनुशासन के साथ इन समाधानों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करें।'आलोचकों को चुप कराने और सरकार की अक्षमता से ध्यान भटकाने का अभियान पूरे चीन में बढ़ते अपराध की आशंकाओं के बावजूदसार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय में सुरक्षा प्रशासन ब्यूरो के प्रमुख किउ बाओली ने इस साल की पहली छमाही में बताया कि देश भर में आपराधिक मामलों में साल दर साल १६.३ प्रतिशत की गिरावट आई हैऔर लोगों की सुरक्षा की भावना में लगातार बेहतरी आई है। अपराध की घटनाओं में कथित कमी और सामूहिक हिंसा, धोखाधड़ी और अलगाववाद पर ध्यान केंद्रित करने के प्रचार के बावजूदयह संदेह पैदा होता है कि १००दिवसीय अभियान अन्य कारणों से शुरू किया गया हो सकता है।जैसे कि २०वीं पार्टी कांग्रेस से पहले स्थिरता को लागू करना या उन नागरिकों को आश्वस्त करना,जो महामारी के दौरान सरकार द्वारा लागू पृथकवास नीति की क्रूरता और उदासीनता से निराशा महसूस करते हैं।

सितंबर के अंत मेंअभियान की समाप्ति की मूल तिथि से एक सप्ताह पहलेचीन के सरकारी समाचार-पत्र 'चाइना डेली'ने रिपोर्ट प्रकाशित की कि अपराध के खिलाफ देशव्यापी कार्रवाई के दौरान 'पुलिस ने लगभग ६,४०,००० आपराधिक मामलों को सुलझाया और १४ लाख संदिग्धों को हिरासत में लिया। 'अखबार में छपी इस रिपोर्ट में सुरक्षा प्रशासन ब्यूरो के प्रमुख ने नई निवारक पुलिसिंग क्षमताओं के बारे में भी शेखी बघारते हुए कहा कि सार्वजनिक सुरक्षा रोकथाम और नियंत्रण प्रणाली से विकास में तेजी आई है।'

'१०० दिवसीय अभियान'का स्थानीय संस्करण

तिब्बत और अन्य तथाकथित 'अल्पसंख्यक' क्षेत्रों में अभियान को जाहिर तौर पर अधिकारियों के लिए सुरक्षा छतरी के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है ताकि वे असहमतिपूर्ण विचार रखने वालों पर अपनी कार्रवाई तेज कर सकें।

इस तरह के स्थानीय संस्करण झिंझियांग (उग्यूरों को पूर्वी तुर्केस्तान के रूप में जाना जाता है) में अगस्त की शुरुआत में लागू किए गए थे। उदाहरण के लिए, जब राष्ट्रव्यापी '१००दिवसीय अपराध विरोधी अभियान'चोरी जैसे अपराधों पर केंद्रित था, तब अमेरिकी प्रसारक रेडियो फ्री एशिया ने बताया कि झिंझियांग के अधिकारी कथित रूप से 'विश्वासघाती'उग्यूरों को निशाना बना

रहे हैं जिन्हें 'धार्मिक चरमपंथी,अलगाववादी,आतंकवादी और दो चेहरे वाले व्यक्ति'के रूप में देखा जाता है।'दक्षिण-पश्चिमी झिंझियांग के एक प्रमुख शहर होटन (चीनी: हेटियन) में एक पुलिस अधिकारी ने पुष्टि की कि, 'इस ऑपरेशन में जेबकतरे और चोर हमारे मुख्य निशाने पर नहीं बल्कि दूसरी प्राथमिकता पर हैं। मुख्य निशाने पर वे हैं,जिनका मैंने पहले उल्लेख (अविश्वसनीय उइगर) किया था।'

तिब्बत में 'अपराध पर नकेल'कसने के उदाहरण

भारत में ऑनलाइन प्रकाशित एक तिब्बती-भाषा समाचार साइट- तिब्बत टाइम्स के अनुसार, तिब्बत की राजधानी ल्हासा में अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई जोरों पर है।ल्हासा पुलिस बल में पुलिस की तैनाती बढ़ रही है। इसके कारण पुलिस की मनमानी तलाशी और निगरानी और अधिक बढ़ी हुई है। इसके परिणामस्वरूप तिब्बतियों की मनमानी और अनौपचारिक हिरासत में भी बढोतरी हुई है।

तिब्बत में'१००दिवसीय अभियान' डिजिटल मोड में भी काफी तेज हुआ और इसने सुर्खियां बटोरी है। पिछले कुछ महीनों मेंचीनी सरकार ने तिब्बती में बैनर पोस्ट किए हैं,जिसमें लिखा है- 'लोगों के लिए डिजिटल सुरक्षा, डिजिटल सुरक्षा लोगों पर निर्भर करती है'। उन्होंने स्थानीय तिब्बतियों के साथ बैठकें भी की हैं, जिसमें देश के बाहर परिवार के सदस्यों और व्यापारिक साझेदारों से संपर्क न करने की चेतावनी दी गई है।

इसके अलावातिब्बत में लोगों को मनमाने तरीके से हिरासत में लिए जाने और गायब कर देने के कई मामले सामने आए हैं। ३१ जुलाई कोनिर्वासित तिब्बती मीडिया आउटलेट- 'वॉइस ऑफ तिब्बत'ने बताया कि तिब्बत में '१००दिनों के अभियान'के दौरान तथाकथित तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के छह तिब्बतियों को अज्ञात कारणों से हिरासत में लिया गया। १२ अगस्त कोसेरनी जिले के कर्मा समदुप को दलाई लामा की फोटो वाला लॉकेट पहनने और अपनी कार में दलाई लामा की तस्वीरें रखने के लिए गिरफ्तार किया गया था। १३ अगस्त कोनागचू शहर से एक मां- बेटी की जोड़ी को गिरफ्तार किया गया। बेटी को बाहरी लोगों से संपर्क करने और अवैध तस्वीरें साझा करने के आरोप में एकांतवास हिरासत में रखा गया।

इसके अलावाहाल में दमनकारी कोविड-१९ प्रतिबंधों की जानकारी और ऑडियो-विजुअल सामग्री कथित तौर पर साझा करने के आरोप में सात तिब्बतियों की गिरफ्तारीको भी '१००दिवसीय अभियान'के तहत मामलों में गिना जा सकता है।

तिब्बत में २०१८-२१ के बीच के तीन साल तक चले दमन की पुनरावृत्ति

तिब्बत और झिंझियांग में चल रहे इस अभियान की प्रकृति की तुलना जनवरी २०१८ से २०२१ तक चले 'स्वीप अवे ब्लैक एंड एलिमिनेट एविल (अंधकार दूर भगाओ और बुराई को मिटाओ)'अभियान की कार्रवाई से की जा सकती है। वास्तव में तिब्बत और झिंझियांग में अपराधों पर नकेल कसने का तीन साल तक वह विशेष अभियान चल रहा था तभी वर्तमान अभियान की शुरुआत की गई थी। तीन साल की कार्रवाई में संगठित अपराधों के साथ-साथ 'सामाजिक गड़बड़ियों'को भी खत्म करने का लक्ष्य रखा गया था। उस दौरान यह नारा आम हो चुका था, जिसमें लिखा होता था, 'व्यहेर देयर इज ब्लैक,स्वीप इट,व्यहेर देयर इज नो ब्लैक,एलिमिनेट एविल एंड व्यहेर देयर इज नो एविल,क्योर डिसऑर्डर (जहां काला है, उसे साफ करो। जहां काला नहीं है, वहां बुराई को खत्म करो और जहां बुराई नहीं है, वहां विकार का इलाज करो)'।

चीनी सरकारी समाचार एजेंसी- 'शिन्हुआ' ने बताया कि मार्च- २०१९ के अंत तक अभियान के तहत ७९,०१८ लोगों से जुड़े 'काले और बुरे' गतिविधियों के १४,२२६ मामलों का खुलासा किया गया था। 'काली और बुरी' ताकतों के खिलाफ इस अभियान के तहत पर्यावरण और भ्रष्टाचार विरोधी कार्यकर्ता अन्या सेंगद्रा को दिसंबर २०१९ में विशेष रूप से सात साल की जेल की सजा सुनाई गई थी।

❖❖❖❖❖

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Deputy Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
उप–समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

October, 2022, Years: 43 Issue: 10 Regd No. : RNI 34636-79

स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल और भारत में चेक राजदूत डॉ. एलिस्का ज़िगोवा

दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म के छात्रों के साथ भारत तिब्बत समन्वय कार्यालय के कर्मचारी